Every Fortnight

July II 2014

मूल्य ♦ दस रुपए

बालहंस

- टिप-टिप बरसा पानी
- रेनबो बोले तो...
- टेढ़ी नाक चने की
- काला बादल आया
- नयना
- बंदर नहीं हैं चिंपांजी
- ज्वालामुखी

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

वर्ष- 29 अंक- 1 15-31 जुलाई, 2014 पृष्ठ- 68

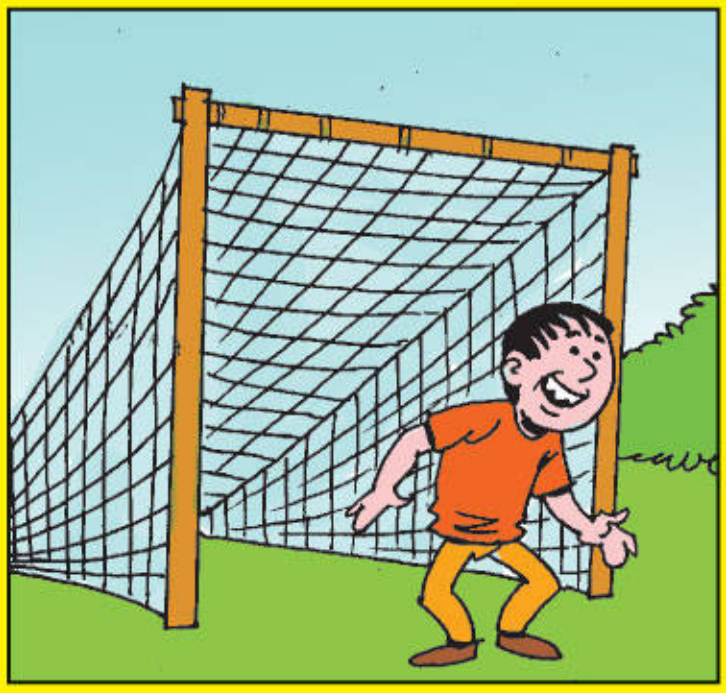

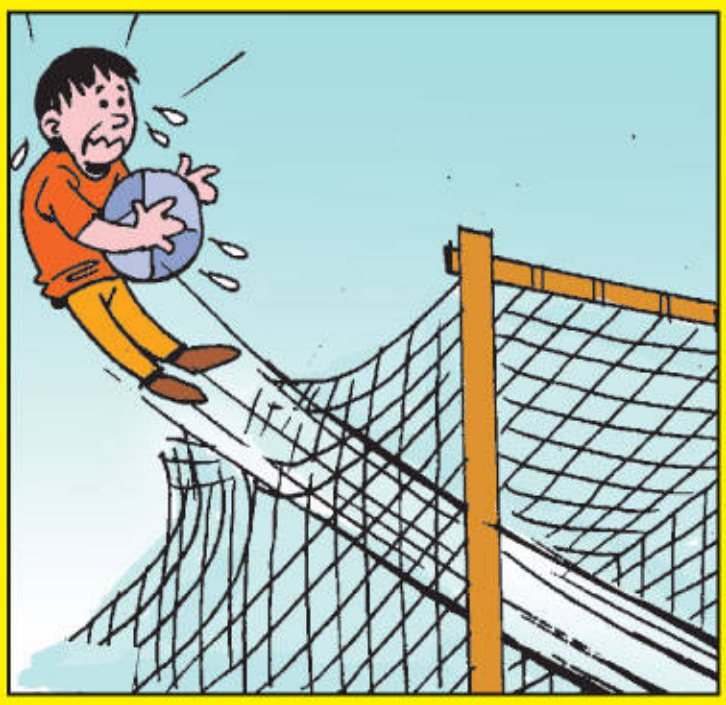

वर्ष- 29 अंक-1
जुलाई (द्वितीय) 2014, जयपुर

कहानियां

टेढ़ी नाक चने की- 5
अनूठा रिटर्न गिफ्ट- 6-7
सबसे सुंदर कौन- 8-9
काला बादल आया- 10-11
नयना- 12-13

विविध

सीख सुहानी- 14
टिप-टिप बरसा पानी- 24-25
रेनबो बोले तो...- 26-27
छाता मन भाता- 28-29
बालहंस न्यूज- 30
सैरसपाटा- 32-33
इल्यूजन- 36-37
बोलें अंग्रेजी- 39
गुदगुदी- 40-41
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44-45
क्यूं और कैसे/कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
बालमंच- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
अंतर बताओ- 52
बिंदु से बिंदु मिलाओ- 53
किड्स क्लब- 54-55
बंदर नहीं है चिंपांजी- 56-57
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

चित्रकथाएं

विपत्ति ने सिखाया- 15-17
ज्वालामुखी- 20-23
ई-मैन- 62-65

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह

फोटो एडिटिंग: संदीप शर्मा

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

अब बालहंस एक क्लिक पर, log on करें : balhans.patrika.com
फेसबुक पर पढ़िये: www.facebook.com/patrikabalhans

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005790 पर संपर्क करें।

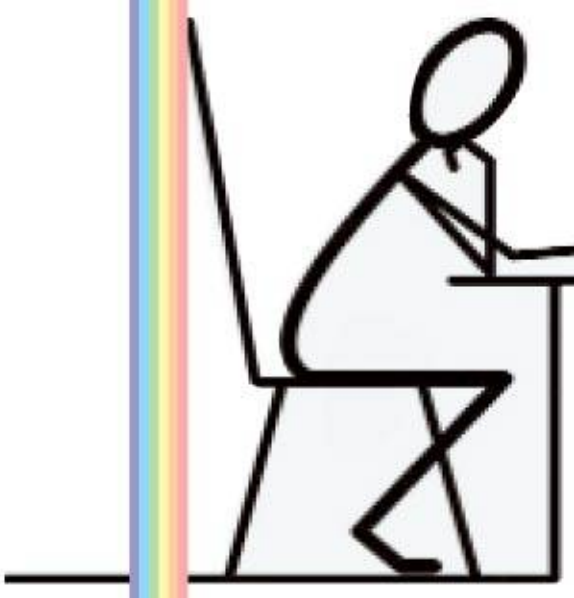

संपादकीय

दोस्तो,

बारिश का मौसम है। बारिश की बूंदें जब शरीर पर टिप-टिप गिरती है तो शरीर में एक अजीब-सी सिहरन और फुर्ती दौड़ जाती है। देश में वर्षा की महत्ता से तो तुम सभी परिचिति हो ही। कमजोर मानसून की जरा-सी आहट हमारे होश उड़ा देती है। यहां की कृषि व्यवस्था और देश के कई हिस्से पेयजल और सिंचाई के लिये अच्छे मानसून पर ही निर्भर हैं। यानी मानसून अच्छा तो देश की अर्थव्यवस्था भी ठीक रहेगी, ऐसा माना जाता है। सही भी है, बिन पानी सब सून। लेकिन वर्षा होने के कारण भले ही प्राकृतिक होते हों, अभी भी अपने देश में हम इसके लिये ईश्वर से प्रार्थना जरूर करते हैं कि वह समय पर आए, और इतनी आए कि हमें उसकी कमी महसूस न हो। एक छोटी-सी कथा सुनिये।

एक समय किसी गांव में वर्षा न होने से भीषण जलसंकट खड़ा हो गया। पशु और मनुष्य दोनों ही त्रस्त हो गये। तब सभी ने मिलकर वर्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने का निश्चय किया। एक निश्चित स्थान पर सभी एकत्र हुए। इतने में एक बालक छतरी लिये आया और वह भी सबके साथ प्रार्थना करने लगा। लोगों ने पूछा, 'यह छतरी क्यों लाये?' तो उसने उत्तर दिया, 'जब आप सभी लोग ईश्वर के पास वर्षा के लिये प्रार्थना करने आये हैं तो मैं भी उसी आशा में चला आया। सामान्य लोग भी किसी वस्तु के मांगने पर हमें निराश नहीं करते तो फिर ईश्वर के यहां क्या कमी है? वर्षा आयेगी इसलिये उससे बचने के लिये छतरी ले आया।' कई लोग तो इस पर उसका मजाक उड़ाने लगे। परन्तु बालक की श्रद्धा से प्रसन्न होकर प्रभु ने वर्षा भेज ही दी। सब भीगने लगे, परन्तु बालक छतरी के नीचे सकुशल घर लौट आया।

तुम्हारा बालहंस

टेढ़ी नाक चने की

कहानी

चने की नोक या नाक अन्य अनाज की अपेक्षा मुड़ी या टेढ़ी होती है। इसके टेढ़ेपन का भी एक रोचक कारण है। बात उस समय से आरंभ होती है जब चने की नाक टेढ़ी नहीं होती थी। पर चना इस बात को सोच-सोच कर परेशान था कि मानव जाति उसे अपने स्वाद के कारण तरह-तरह से पीड़ा दे रही है। चने के बूट पकने पर खेत से उखाड़ खलिहान में पटक कर बैलों के खुर तले रौंदना, थ्रेशर में दल के दाल बनाना, च□की में पीस कर बेसन बनाकर नाना प्रकार के व्यंजन बनाकर मजे लेना मानव जाति का तो स्वभाव ही बन चला था।

इतनी पीड़ा-यातना झेलते-झेलते चने की सहनशा□ित भी जवाब देने लगी। इस पीड़ा का हल ढूंढ़ने के लिए अ□सर वह गहरे सोच में डूब जाया करता। एक दिन उसके दिमाग में आया कि यह पूरी सृष्टि परमात्मा की बनाई हुई है। प्रत्येक पदार्थ को उसी ने उत्पन्न किया है। उसे अपनी व्यथा सुनाने में हर्ज ही □या है। हो सकता है वह उस पर होने वाले अत्याचार से छुटकारा दिला दें।

खूब सोच-विचार के बाद उसने ईश्वर से मिलने का मानस बना लिया। चूंकि ईश्वर पृथ्वीलोक से अलग ऊपर स्वर्ग में विराजता है, इसलिये वह भी उस ओर चल पड़ा। चना आखिरकार स्वर्ग में ईश्वर के निवास स्थान पर पहुंच ही गया और दरबान से अनुमति लेकर प्रविष्ट हो गया। कुछ क्षण पश्चात् ईश्वर के दरबार में उसकी भी सुनवाई शुरू हुई। चने ने शुरू से आखिर तक उस पर होने वाले अत्याचार की कथा सुना दी और गुहार की कि उस पर होने वाले अत्याचार से उसे मु□ित दिलाई जाए।

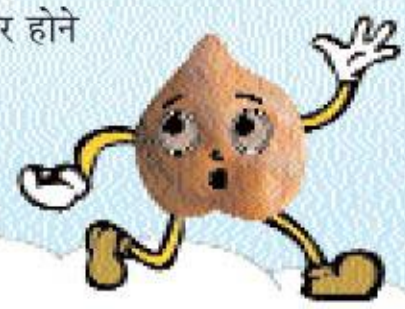

ईश्वर ने चने की दास्तान बड़े ध्यान से सुनी और चने के इतना स्वादिष्ट होने से उनके मुंह में पानी आता रहा। यद्यपि उन्होंने इस भाव को प्रकट नहीं होने दिया। उनके भी जी में आया कि जब वह खुद ही चलकर यहां आया है तो मैं भी इसका स्वाद चखने से □यो वंचित रहूं? ज्योंही ईश्वर ने लपक कर हाथ से चने को दबोचकर मुंह में रखना चाहा, चना फौरन सिर पर पांव रख कर भागा और स्वर्ग से पृथ्वी पर कूद लिया। कूदते समय चने का अंदाजा डगमगा गया और वह नाक के बल पृथ्वी पर गिरा, जिससे उसकी नाक मुड़ गई।

कहते हैं, तभी से चने

-ईश्वर दयाल माथुर

अनूठा रिटर्न गिफ्ट

कहानी

जुलाई का महीना था । आसमान सतरंगा हो चला था। मौसम खुशनुमा हो गया था। वातावरण में भीनी-भीनी ठंडक थी। चारों ओर एक उमंग और मस्ती-सी थी। सन्नी बेहद उत्साहित था। उसका जन्मदिन जो आने वाला था। जुलाई की उन्नीस तारीख को पड़ता था, सन्नी का जन्मदिन।

इस वर्ष अपने जन्मदिन की प्लानिंग उसने पहले से ही कर ली थी। कहां पार्टी होगी, कौन-कौन आएगा, □या बनेगा... सभी कुछ उसने सोच रखा था। मां को भी उसने राजी कर लिया था। बस पापा को मनाना बाकी था।

सन्नी बारह वर्ष का बेहद प्यारा बच्चा था। म□मी-पापा के साथ शहर के बीचोंबीच बसी कॉलोनी में रहता था। अच्छे कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ने वाले सन्नी को गैजेट्स का बहुत शौक था। यूं तो वो खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों, साहित्यिक क्रियाकलापों में आगे रहता था, पर लैपटॉप, क□प्यूटर गे□स का उसे एक जुनून-सा था।

सन्नी के पापा उसे हर साल जन्मदिन पर मुंहमांगी चीज दिलवाते थे। अब तक बर्थ-डे पर साइकिल, वीडियो गेम, रोलर स्केट्स, बैडमिंटन रैकेट... और न जाने □या-□या सन्नी को गि□ट में मिल चुके थे।

इस बार सन्नी ने बहुत ही खास चीज चुनी थी। पापा के पूछने पर उसने लगभग दस दिन पहले ही बता दिया कि उसे जन्मदिन पर 'प्ले स्टेशन' चाहिए। पापा ने तुरन्त हां कह दी। सन्नी को अब अपने जन्मदिन का बेसब्री से इन्तजार था। वो तो दोस्तों को प्ले स्टेशन पर खेलने का न्यौता भी दे आया था।

ह□ताभर गुजर गया था, पर सन्नी को घर में पैक करके रखा हुआ कोई गि□ट नजर नहीं आया था। उसे बड़ी जिज्ञासा थी कि कौनसी क□पनी का प्ले स्टेशन पापा ने खरीदा होगा, पर बर्थ-डे के एक दिन पहले तक ढंके-छिपे गि□ट का कोई अता-पता नहीं था।

खैर! जन्मदिन भी आ गया। अगली सुबह उन्नीस जुलाई थी। सन्नी अपने कमरे में लेटा करवटें बदल रहा था। पार्टी की सारी तैयारी हो चुकी थी। सजावट के सभी आइटम और खाने-पीने के सामान लाये जा चुके थे।

रात में पानी पीने के लिए सन्नी पापा-म□मी के कमरे की तरफ से गुजरा तो उसने सुना। वो धीमे-धीमे बात कर रहे थे । मां पापा को ढांढ़स बंधा रही थी।

इस साल बिजनेस में पापा को बहुत घाटा हुआ था और वो काफी आर्थिक तंगी में थे। तो □या यही कारण था कि उसका बर्थ-डे हमेशा की तरह वो लोग होटल में नहीं मना पा रहे थे। सन्नी को अपनी भूल का एहसास हुआ कि बिना असलियत जाने उसने पापा से मंहगे गि□ट की फरमाइश कर दी थी। पापा किसी भी कीमत पर उसे पूरा करेंगे उसे मालूम था। रातभर सन्नी यही सोचता रहा। उसे ठीक से नींद

सवेरे जब सन्नी उठा तो उसकी आंखों में चमक थी। उसने उठते ही म□मी-पापा से आशीर्वाद लिया। नहा-धोकर ईश्वर की प्रार्थना कर सन्नी स्कूल चला गया। सभी टीचर्स और दोस्तों ने उसे जन्मदिन की बधाई दी। सन्नी ने स्कूल में टॉफियां बांटी। शाम को घर पर पार्टी के लिए वो सभी को आमंत्रित कर आया ।

घर रंगबिरंगी झालरों व लाइटों से सजा हुआ था। मां ने तरह-तरह के लजीज व्यंजन बनाए थे। नियत समय पर मेहमानों का आना शुरू हुआ। सन्नी ने केक काटा और दोस्तों के साथ गे□स खेले। म□मी ने सभी बच्चों को मनोरंजक गे□स खिलाए और जीतने वालों को पुरस्कार भी दिए।

केक कटने के तुरन्त बाद पापा-म□मी ने सन्नी को गि□ट दिया। एक प्यारा-सा 'प्ले स्टेशन।' सन्नी की आंखें चमक उठीं। प्रतिष्ठित क□पनी का प्ले स्टेशन था। खासा मंहगा भी। दो साल की तो गारंटी ही थी। सभी दोस्तों ने उसे घेर लिया। उसने सभी को प्ले स्टेशन पर गेम खिलाया। सभी दोस्तों ने खूब वाहवाही की।

सन्नी को अपने पापा-म□मी पर गर्व हो रहा था। रात को पार्टी खत्म होने पर सन्नी ने मां के साथ घर समेटने में मदद की। उसने पापा-म□मी को थैंक-यू कहा और एक छोटा-सा डि□बा उनके सामने रख दिया। म□मी-पापा ने हैरानी से देखा। सन्नी ने बताया कि वह उनका रिटर्न गि□ट है। पार्टी में सभी मेहमानों को रिटर्न गि□ट दिए गए थे, इसीलिए पापा-म□मी को भी सन्नी ने रिटर्न गि□ट दिया है।

पापा ने उत्सुकता से डि□बा खोला। उसमें सन्नी के जमा किये हुए चार हजार रुपए थे। पापा ने प्रश्नवाचक निगाहों से सन्नी को देखा। वह रुंधे गले से बोल रहा था, 'मैंने आपकी बातें सुन ली थीं पापा, प्ले स्टेशन काफी महंगा होता है ना!' पापा ने सन्नी के सिर पर हाथ फेरते हुए उसे पैसे वापस कर दिये और बोले, 'बच्चे माता-पिता की परवाह करें, इससे बड़ा रिटर्न गि□ट और □या हो सकता है। सदा खुश रहो बेटा।' सन्नी के रिटर्न गि□ट ने उनका दिल जीत लिया था।

सबसे सुंदर कौन

एक बार घनी काली रात में ढेर सारे तारे आकाश में चमक रहे थे। अचानक उनमें बहस छिड़ गई कि कौन-सा तारा सबसे सुंदर, सबसे चमकीला है? सभी तारे अपने को अधिक सुंदर और चमकीला बताने लगे। बहस बढ़ते-बढ़ते लड़ाई तक जा पहुंची। आखिर सभी तारों ने मुंह फुलाकर चमकना ही बंद कर दिया।

रात्रि देवी जब टहलने निकलीं, तो उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक भी तारा आकाश में नहीं चमक रहा है। उन्हें तारों पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने तत्काल सभी तारों की सभा बुलाई और न चमकने का कारण पूछा।

इस पर सभी तारे एक साथ कह उठे, 'आप ही बताइए, हम में सबसे प्यारा और चमकीला तारा कौन है?'

'जब तक इस बात का निर्णय नहीं हो जाता, हम सब एक साथ नहीं चमक सकते।' नीले तारे ने कहा।

'□या तुम जानते हो तु□हारी वजह से पृथ्वीवासियों को कितनी परेशानी हो रही है?' रात्रि देवी ने गुस्से से कहा, 'घनी अंधेरी रातों में जब चंदा नहीं आता, तब पृथ्वीवासी तुम तारों की सहायता से, रास्ता ढूंढ़ते हैं, दिशाएं पहचानते हैं, और तुम लोग अपना काम छोड़कर लड़ाई कर रहे हो।'

'लेकिन जब तक हमारी सुंदरता का निर्णय नहीं होगा, हम नहीं चमकेंगे।' सब तारों ने मिलकर कहा।

'ठीक है, अब तु□हारा निर्णय पृथ्वीवासी ही करेंगे। मैं तुम सबको फूल बनाकर पृथ्वी पर भेज रही हूं। तुम वहीं जाकर पता करो कि लोग तु□हारे बारे में □या कहते हैं?' रात्रि देवी ने कहा। उन्होंने सभी तारों को रंग-बिरंगे फूल बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया।

सभी तारे फूल बनकर धरती पर बिखर गए। आकाश तारों के बिना सूना-सूना लगता। पर तारे अपने को सबसे प्यारा, सुंदर और चमकीला समझकर खुशी-खुशी पृथ्वी पर आ

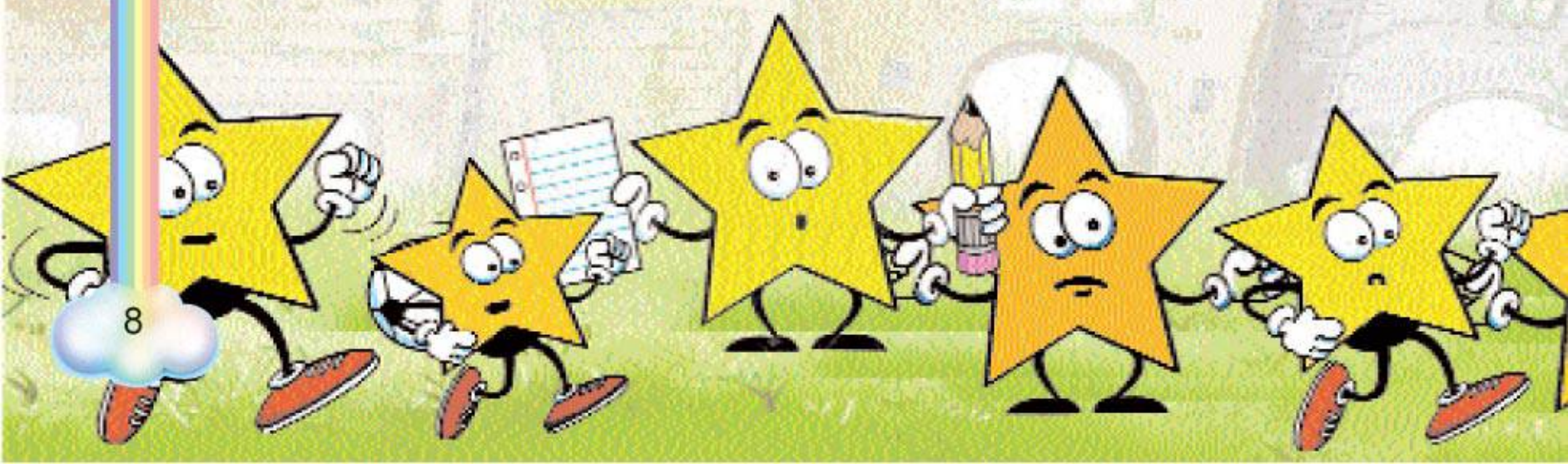

कहानी

पृथ्वी पर तारों ने हर किसी से यह जानना चाहा कि लोगों को सबसे प्यारा तारा कौनसा लगता है? लेकिन हर कोई सबसे प्यारा, सबसे चमकीला सूरज को कहता, उसके बाद चंदा को। तारों का नाम तो कोई लेता ही नहीं था।

अंत में तारों ने एक बुजुर्ग व्यि◻त को रोककर उनसे पूछा, 'आखिर ◻यों लोग सूरज और चंदा की तारीफकरते हैं, तारों की नहीं।'

बुजुर्ग व्यि◻त ने कहा, 'सूरज से जीवन है। वही हमें ऊर्जा देता है, प्रकाश देता है। साथ ही रात को अपने प्रकाश से चंदा को रोशनी दे जाता है। तारों का ◻या है, कभी चमके, कभी नहीं। जैसे आजकल देखो, एक भी तारा नहीं दिखता।'

यह सुनकर तारे बहुत दुखी हुए। वे रात्रि देवी से प्रार्थना करने लगे, 'हमें वापस आकाश पर बुला लीजिए।' रात्रि देवी ने जब देखा कि तारे अपनी गलती पर शर्मिंदा हैं, तो वह प्रकट हो गईं।

'◻या तुम लोगों ने यह जान लिया कि सबसे प्यारा, सबसे सुंदर कौन है?' रात्रि देवी मुस्कराई।

'जी।' सभी तारे एक साथ सिर झुकाकर बोले।

'हमें वापस आकाश में ले चलिए। अब हम कभी झगड़ा नहीं करेंगे।' नन्हे तारे ने कहा।

रात्रि देवी उन्हें समझाते हुए बोलीं, 'तुम लोग काम को छोड़कर, अपनी-अपनी प्रशंसा में लगे रहे, जबकि सूरज और चंदा सबकी भलाई के लिए काम में लगे रहे। सुंदरता से ज्यादा अच्छे कामों की प्रशंसा होती है।'

सभी तारों ने अपनी गलती मान ली। रात्रि देवी ने तारों को आकाश में पहुंचा दिया। थोड़ी देर में ही पूरा आकाश टिम-टिम करते तारों से सज गया।

-नरेन्द्र

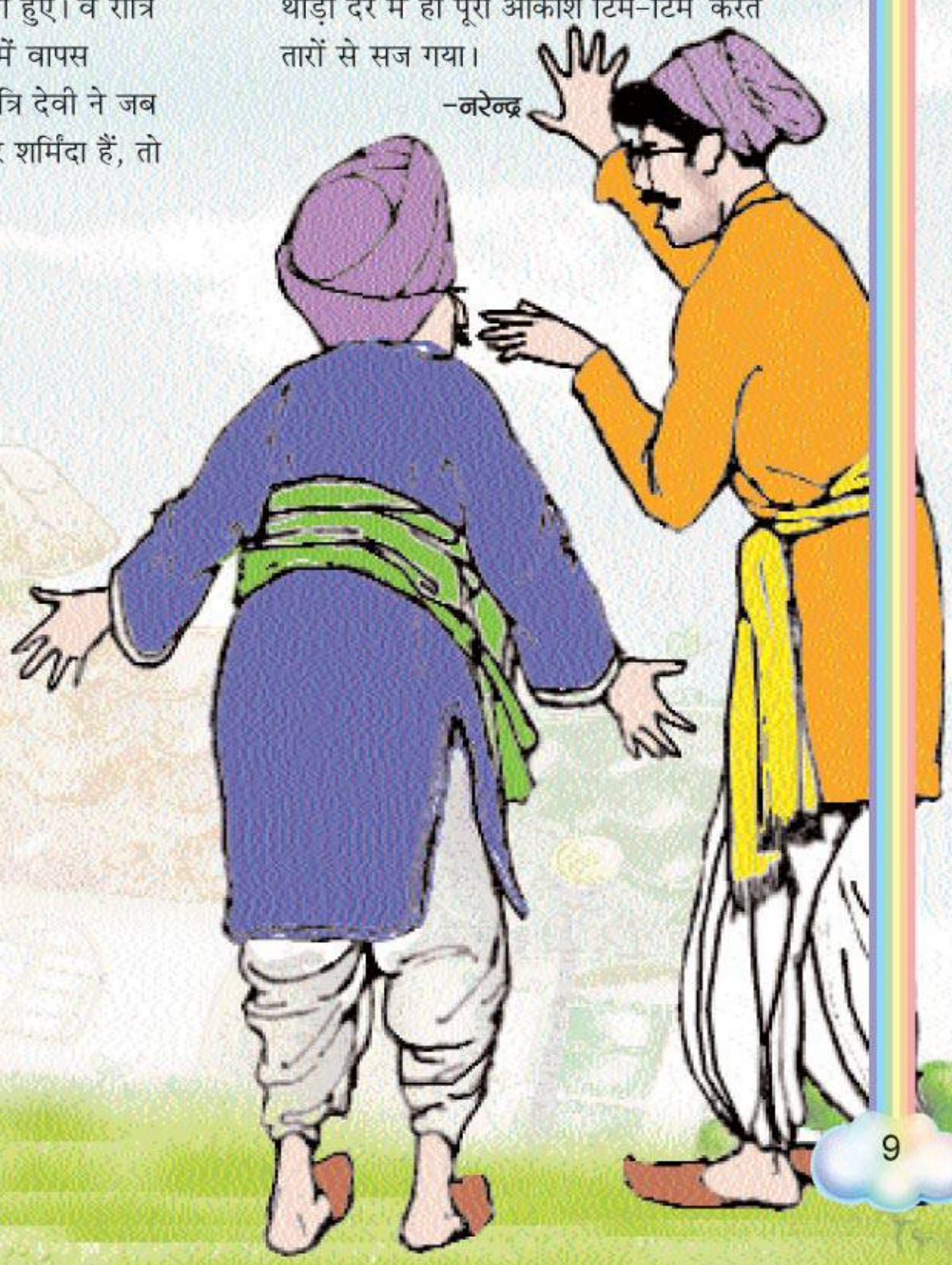

काला बादल आया

आकाश में सफेद रंग का धुआं रहता था। उसको खुद पर बहुत घमंड था। एक दिन धुआं आकाश में घूम रहा था। वहां उसने हवा को देखा तो वह उससे बोला, 'नमस्ते, हवा बहन।'

'नमस्ते, कहो कैसे आना हुआ?' हवा ने मुस्करा कर कहा।

'ऐसे ही, बारिश का मौसम आ गया है तो सोचा थोड़ा घूम-फिर लूं। आपके हालचाल तो ठीक हैं न?' सफेद धुआं बोला। उसके चेहरे से खुशी झलक रही थी।

'हां, बिल्कुल ठीक हूं। बस, तु□हारी दुआ है,' हवा ने कहा।

आकाश में धुआं और हवा दोनों घूम रहे थे। तभी उधर से एक काला बादल गुजरा। हवा उसे देख कर मुस्करा कर बोली, 'बादल भैया, नमस्ते। बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई आपसे।'

काले बादल ने भी मुस्कराकर जवाब दिया, 'नमस्ते हवा बहन, तुम तो जानती ही हो गर्मियों में मेरा कोई काम नहीं रह जाता। अब काम के दिन फिर आ गए हैं, इसलिए नजर आ रहा हूं।'

हवा ने सफेद धुएं से शिकायत की, '□यों रे, तुमने बादल भैया को नमस्ते नहीं किया, □यों?'

'अरे, लगता है जैसे मैंने कुछ बुरा कर डाला हो। काले-कलूटे बादल को भला मैं □यों नमस्ते करने लगा। वह □या मुझसे सुंदर है। देखो तो मैं कितना खूबसूरत हूं।' सफेद धुआं इतराकर बोला।

'ओहो, जरा धीरे बोला करो, भाई। इस तरह घमंड नहीं किया करते।' हवा ने सफेद धुएं को समझाया।

'अरे, तू तो बड़ी डरपोक है। मैं तो काले बादल को सुनाकर कहता हूं। वह मेरा □या कर लेगा।' सफेद धुएं ने कहा।

यह सुनकर काले बादल को गुस्सा आ गया। वह इतने जोर से गरजा कि उसकी आवाज दूर-दूर तक फैल गई। उसने हवा से कहा, 'जरा तुम कुछ दूर हट जाओ, बहन। मैं इस घमंडी को मजा चखाता हूं।'

हवा ने बीच-बचाव किया और सफेद धुएं को समझाया, 'भाई, लगता है काले बादल के मह□व से तुम अनजान हो। इसके बिना पृथ्वी

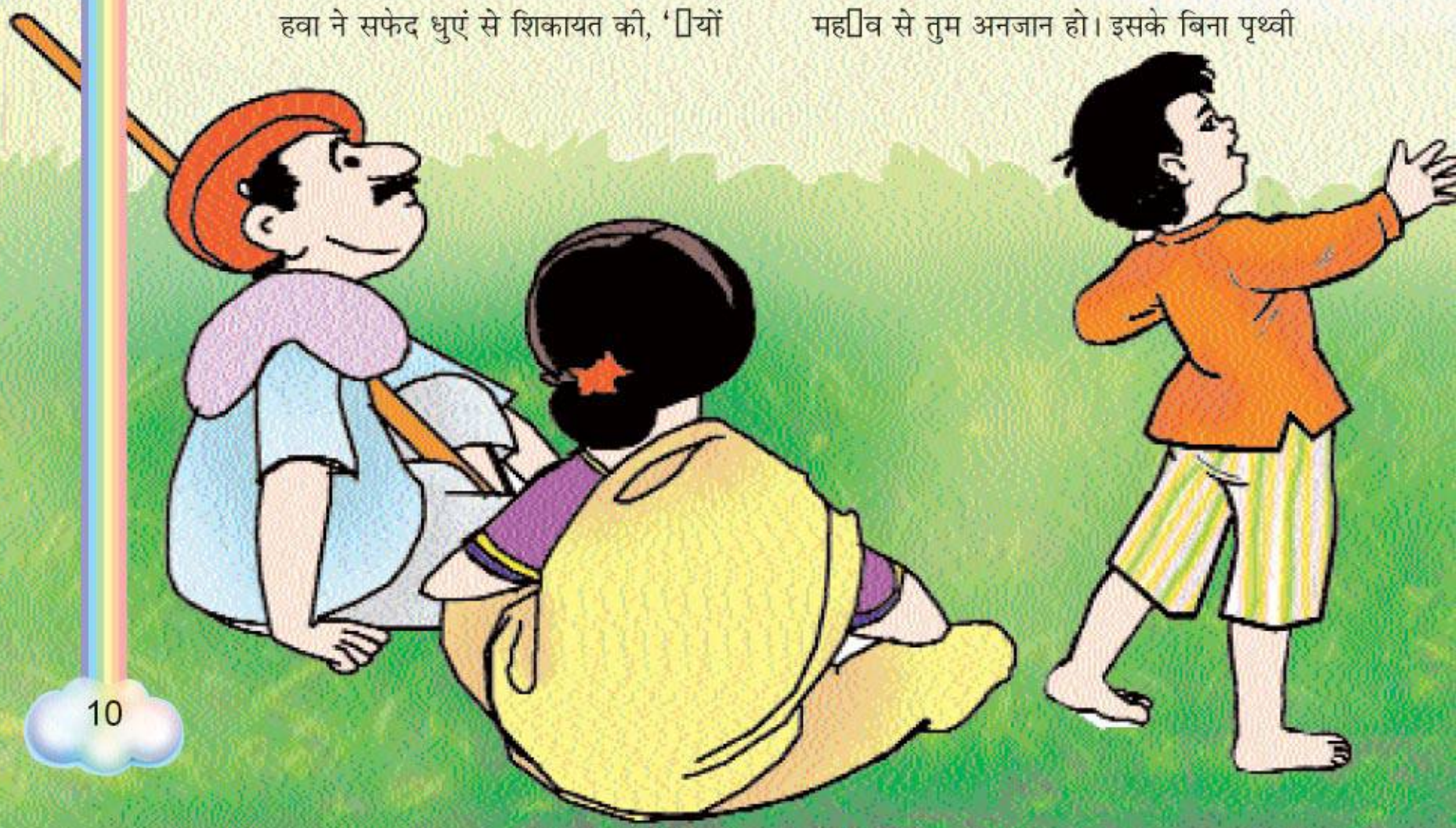

इनसे माफी मांग लो।' अब सफेद धुएं को कुछ समझ आया। उसने काले बादल से माफी मांगी, 'बादल भैया, मुझे माफ कर दो। मैंने तु□हारा अपमान किया।'

'धुआं भाई, ईश्वर ने सबको अलग-अलग रंग-रूप दिए हैं। लेकिन किसी को अपनी सुंदरता पर अभिमान करना अच्छी बात नहीं है।' काले बादल ने उसे समझाया।

'हां, तो बादल भैया, किस तरफसे आ रहे हैं आप?' हवा ने पूछा।

'बहन, बस हिमालय दादा से टकरा कर रास्ते में बरसता आया हूं और अब बिहार, उ□ारप्रदेश और पंजाब तक जाऊंगा। तु□हारे हाल-चाल तो ठीक हैं न? बादल ने खुश होकर कहा।

'बस, आपकी दुआ से ठीक हूं। दिनभर चलती रहती हूं। बस, मेरा तो यही काम है,' हवा ने कहा।

'हां-हां, दूसरों की भलाई और सेवा करना तो बहुत अच्छा है। देखो न, मैं भी सारे जीवों के लिए ही तो पानी बरसाने जा रहा हूं। अगर न बरसाऊं तो ये बेचारे गर्मी और भूख से तड़प-तड़प कर दम तोड़ दें।' बादल ने कहा।

'अच्छा, इस दुनिया के लिए तुम इतने मह□वपूर्ण हो।' सफेद धुएं ने आश्चर्य से कहा।

'अच्छा, फिर मिलते हैं। मुझे जल्द ही एक ऐसी जगह पर पहुंचना है, जहां मेरी बहुत जरूरत है।' काले बादल ने चलते-चलते कहा।

'जरूरत?' सफेद धुआं हैरानी से बोला।

'हां जरूरत, बेचारे किसान जी-तोड़ मेहनत करते हैं। अगर बादल भैया व□त पर न बरसे तो न जाने उनका □या हो?' हवा ने कहा।

'तो ठीक है, बादल भैया। मैं भी आज तु□हारे साथ चलूंगा।' इतना कहकर सफेद धुआं भी काले बादल के साथ तेजी से उड़ चला।

सफेद धुआं बहुत तेजी से आगे निकल गया। लेकिन काला बादल भारी होने की वजह से धीरे-धीरे चल रहा था। आगे सफेद धुएं ने देखा कि धरती पर कुछ किसान सिर पर हाथ धरे उदास बैठे हैं। उनमें से एक छोटा बच्चा काले बादल को देखकर चिल्लाया, 'बापू, देखो काले बादल आ गए। अब जमकर पानी बरसेगा और हमारे खेत लहलहाने लगेंगे।'

तभी हांफता हुआ काला बादल आ गया और जमकर बरसने लगा। थोड़ी ही देर में धरती तरबतर हो गई। किसानों के मुरझाए चेहरे खुशी से खिल उठे। वे नाचने लगे। यह सब देखकर सफेद धुआं भी खुशी से झूम उठा।

-नरेन्द्र देवांगन

नयना

कहानी

मायूस-सा चेहरा और कांपते से कदम उठाये वह अपने स्कूल की तरफ बढ़ रही थी। आज नयना का नए स्कूल में पहला दिन था। कुदरत ने भी □या भद्दा मजाक किया था नयना के साथ। बचपन में एक हादसे में उसने अपनी एक आंख खो दी थी और एक तरफ का चेहरा पूरा जल गया था। तभी से हमेशा खिलखिला कर हंसते रहने वाली नयना के जीवन में उदासी छा गयी थी।

कई बार वह अपना उपहास बनते हुए देखती। अपने सहपाठियों को हंस-हंस कर कानों में फुसफुसाते हुए देखा था उसने। इन सब बातों ने उसके मनोबल और आत्मविश्वास को खत्म-सा कर दिया था। पर एक चीज ऐसी थी जो नयना में नई स्फूर्ति भर देती थी। वह था नृत्य से उसका लगाव। मानो नृत्य में उसकी आत्मा बसती हो। नयना घंटों अकेले कमरे में नृत्य का अ□यास करती थी। नृत्य ही उसके जीवन में अब उसका सबसे सच्चा और अच्छा साथी था।

नयना के नए स्कूल में एक जिला स्तरीय नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था। जब □लास में एक टीचर नृत्य प्रतियोगिता में इच्छुक विद्यार्थियों के नाम लिखने आईं तो नयना ने बड़ी हि□मत से अपना हाथ खड़ा किया। अध्यापिका विचित्र-सी नजरों से उसे घूरकर और नाम लिखकर चली गयी। पीछे से एक छात्र बोला, 'अब यह एक आंख वाली डांस करेगी। कहीं किसी से टकराकर गिर पड़ी तो।' उस लड़के की बात सुन □लास के सभी विद्यार्थी जोर-जोर से हंसने लगे। नयना को रोना आ गया।

विद्यालय की ओर से प्रतिनिधित्व करने के लिए एक छात्र/छात्रा को नृत्य के लिए चुना जाना था। अगले दिन सभी रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को बारी-बारी से अपनी प्रस्तुति देने के लिए कहा गया। आखिर में नयना की बारी थी। पर उसका नाम आते ही टीचर ने कहा, 'आज समय खत्म हो चुका है और नृत्य प्रतियोगिता के लिए उमा को चुन लिया गया है।' यह कहकर अध्यापिका चली गयी। नयना उदास मन से घर आ गयी।

नृत्य प्रतियोगिता का दिन भी आ गया। उमा जिसे प्रस्तुति देनी थी वह नयना की पड़ोसी थी, और उसने नृत्य के कई गुर नयना से ही सीखे थे। वह जानती थी कि नृत्य में नयना का कोई सानी नहीं था। उमा प्रतियोगी कक्ष में पहुंच गयी। तैयार होने में उसकी मदद के लिए नयना उसके साथ थी। अचानक उमा का पांव फिसल गया और उसके पांव में भयंकर मोच आ गयी। वह ठीक से खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। अपने दर्द से ज्यादा उसे इस बात का भय सता रहा था कि अब वह नृत्य कैसे करेगी और टीचर से □या कहेगी। उसमें किसी को भी चोट के बारे में बताने की हि□मत नहीं थी। अचानक उसकी नजर नयना पर पड़ी। उसने नयना से कहा, 'तुम तुरंत मेरी पोशाक पहन लो और तैयार हो जाओ। आज मेरी जगह तु□हें ही नृत्य करना होगा।' यह कहते हुए उसने पोशाक नयना के हाथों में थमा दी।

नयना के हाथ कांपने लगे। उसके अन्दर छिपी प्रतिभा बाहर आने को छटपटाने लगी, पर वह इतना साहस नहीं जुटा पा रही थी कि उमा की जगह नृत्य करने चली जाए। जब उमा रोने लगी तो नयना को वह पोशाक पहननी पड़ी। उसने जब दर्पण में अपना चेहरा देखा तो उसका मनोबल फिर गिरने लगा। लेकिन उमा के आंसुओं को देखकर उसने अपनी आंखों पर एक पट्टी बांधी और जब उमा का नाम पुकारा गया तो वह मंच पर चली आई। संगीत बजता, इससे पहले ही उसने नृत्य करना शुरू कर दिया। उसके घुंघरू वैसे भी संगीत की ही रचना कर रहे थे। किसी को आभास भी नहीं हुआ कि संगीत नहीं बज रहा। उसकी

ऐसा लग रहा था मानों वर्षों से नयना के हृदय में बसा तूफान आज नृत्य के माध्यम से निकल रहा था। अपमान के कड़वे घूंट पीते-पीते जो दुख, दर्द और रोष उसके अन्दर बसा था आज उसकी दासता उसका नृत्य सुना रहा था। बहुत देर हो गयी पर उसके पांव नहीं रुके।

नयना की मां भी नृत्य प्रतियोगिता देखने वहां आई थी। मां की नजर नयना के पांवों से बहते खून पर पड़ी। वह दौड़कर तुरंत मंच पर पहुंची और अपनी बेटी को गले से लगा लिया। मां का स्पर्श पाते ही अपनी आंखों पर बंधी पट्टी हटाकर नयना फफक-फफककर रो पड़ी और बोली, 'मां, ईश्वर ने मुझसे मेरी सुन्दरता □यों छीन ली? मैं थक चुकी हूं लोगों के ताने सुन-सुनकर। मेरे साथ से सभी को शर्म महसूस होती है। इससे पहले कि सब मुझ पर हंसने लगें, आप मुझे घर ले चलो।'

माइक की वजह से नयना की आवाज सभी को सुनाई पड़ रही थी। उसका उपहास करने वाले सभी विद्यार्थी और अध्यापिका शर्म से सिर नीचे झुकाए खड़े थे। सभागार जो पहले नयना की प्रस्तुति देखकर तालियों की गाड़गड़ाहट से गूंज रहा था, अब अवाक था। नयना के श□द सुनकर चारों तरफ चुप्पी छा गयी और सभी की आंखें भर आईं।

प्रतियोगिता का मूल्यांकन करने वाली जज महोदया अपनी कुर्सी से खड़ी हुई और नयना को गले लगाकर बोली, 'बेटी, तुम कुरूप नहीं, तुम तो सुन्दरता का प्रतीक हो। तु□हारे नृत्य की सुन्दरता ने सभी का मन मोह लिया है। तुम तो इस विद्यालय के प्रांगण में चमकने वाला सूरज हो, इस विद्यालय का स□मान हो।'

यह कहकर जज महोदया ने जैसे ही प्रथम पुरस्कार की घोषणा करने के लिए माइक हाथ में लिया, चारों ओर से नयना-नयना के स्वर सुनाई देने लगे। जज महोदया ने नयना के हाथ में पुरस्कार थमाया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर उसे आगामी जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं। इतना प्यार और स□मान देखकर नयना खुशी से फूली नहीं समा रही थी। अब वह विद्यालय में सबकी चहेती बन गयी थी। नृत्य ने उसे नया जीवन जो दे दिया था।

-मोनिका जैन 'पंछी'

किसान की समस्या

बहुत पहले की बात है। एक गरीब किसान एक गांव में रहता था। उसके पास एक बहुत छोटा-सा खेत था। इसमें कुछ सब्जियां उगाकर वह अपना व अपने परिवार का पेट पालता था। गरीबी के कारण उसके पास धन की हमेशा कमी रहती थी। वह बहुत ईर्ष्यालु स्वभाव का था। इस कारण उसकी अपने अड़ोसी-पड़ोसी व रिश्तेदारों से बिल्कुल नहीं निभती थी।

किसान की उम्र ढलने लगी थी, इसलिए उसे खेत पर काम करने में काफी मुश्किल आती थी। खेत जोतने के लिए उसके पास बैल नहीं थे। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता था। खेत में या आस-पास कोई कुआं भी नहीं था, जिससे वह अपने खेतों की सिंचाई कर सके।

एक दिन वह अपने खेत से थका-हारा लौट रहा था। उसे रास्ते में सफेद कपड़ों में सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा बाबा मिला। बाबा बोला, ' क्या बात है भाई, बहुत दुखी जान पड़ते हो?'

किसान बोला, 'क्या बताऊं बाबा, मेरे पास धन की बहुत कमी है। मेरे पास एक बैल होता तो मैं खेत की जुताई, बुआई और सिंचाई का सारा काम आराम से कर लेता।' बूढ़ा बाबा बोला, 'अगर तुम्हें एक बैल मिल जाए तो तुम क्या करोगे?' तब मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। मेरी खेती का सारा काम बहुत आसान हो जाएगा, पर बैल मुझे मिलेगा कहां से?' किसान बोला। मैं आज ही तुम्हें एक बैल दिए देता हूं, यह बैल घर ले जाओ और घर जाकर अपने पड़ोसी को मेरे पास भेज देना।' बूढ़े बाबा ने कहा।

किसान बोला, 'आप मुझे बैल दे देंगे, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। परंतु आप मेरे पड़ोसी से क्यों मिलना चाहते हैं?' बूढ़ा बाबा बोला, 'अपने पड़ोसी से कहना कि वह मेरे पास आकर दो बैल ले जाए।' बाबा की बात सुनकर किसान को भीतर ही भीतर क्रोध आने लगा। वह ईर्ष्या के कारण जल-भुन कर रह गया। वह बोला, 'आप नहीं जानते कि मेरे पड़ोसी के पास सब कुछ है। यदि आप मेरे पड़ोसी को दो बैल देना चाहते हैं तो मुझे एक बैल भी नहीं चाहिए।' बूढ़े बाबा ने बैल को अपनी ओर खींच लिया और कहा, 'क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी समस्या क्या है? तुम्हारी समस्या गरीबी नहीं, ईर्ष्या है। तुम्हें जो कुछ मिल रहा है, यदि तुम उसी को देखकर संतुष्ट हो जाते और पड़ोसियों व रिश्तेदारों की सुख-सुविधा से ईर्ष्या ना करते तो शायद संसार में सबसे ज्यादा सुखी इंसान बन जाते।'

सीख : हमें ईर्ष्या, घृणा, द्वेष जैसी मानसिक विकृतियों से दूर रहना चाहिए।

सीख सुहानी

प्यार की शक्ति

जापान में एक बहुत बड़े आदमी हुए हैं। उनका नाम था कागावा। लोग उन्हें 'जापान का गांधी' कहा करते थे। वास्तव में वे थे भी गांधीजी की ही तरह। वह शिकावा की मामूली-सी बस्ती में बड़ी सादगी से रहते थे और सबको प्यार करते थे। उसी शहर में एक शैतान आदमी रहता था। वह किसी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता था। उसे सब बुरा कहते थे। जब उसने देखा कि चारों ओर कागावा की प्रशंसा होती है और लोग उसे पूजते हैं, तो उसके मन में कागावा के प्रति बड़ी ईर्ष्या पैदा हुई।

वह कागावा का अहित करने की सोचने लगा। सोचते-सोचते उसने तय किया वह उसे मार देगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। ऐसा निश्चय करके वह उनके घर गया और उन्हें सोते से जगाया। कागावा उठे और उस आदमी की लाल-लाल आंखों और हाथ में तलवार देखकर वे समझ गए कि यह आदमी उन्हें मारने आया है, पर उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं आई और वे उस आदमी को सद्‌बुद्धि देने और उसका कल्याण करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

उस आदमी ने जब यह देखा तो चकित रह गया। वह तो उस संत को मारने आया था और संत को देखो, वह उसके भले के लिए प्रभु से प्रार्थना कर रहे हैं। उनके चेहरे पर शांति और प्रेम भरी मुस्कराहट खेल रही है। उसने तलवार फेंक दी और कागावा के चरणों पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा। कागावा ने बड़े प्यार से उसकी पीठ और सिर पर हाथ फेरा, उसके आंसू पोंछे और कहा, 'कोई बात नहीं, भूल इंसान से ही होती है।' इस घटना के बाद उस व्यक्ति का सारा जीवन ही बदल गया।

सीख : प्यार-स्नेह से दुश्मन को भी दोस्त बनाया जा सकता है।

विपत्ति ने सिखाया

कॉन्सेप्ट- उन्नी
ड्रॉइंग- सिमि मुहम्मा

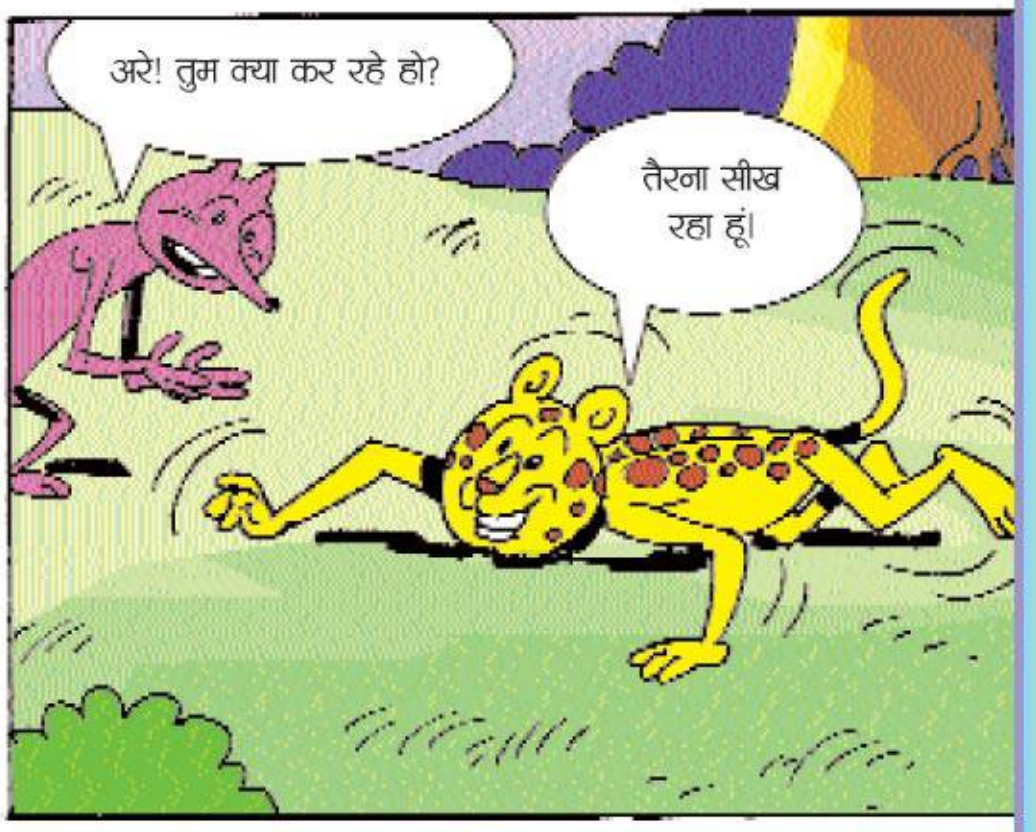

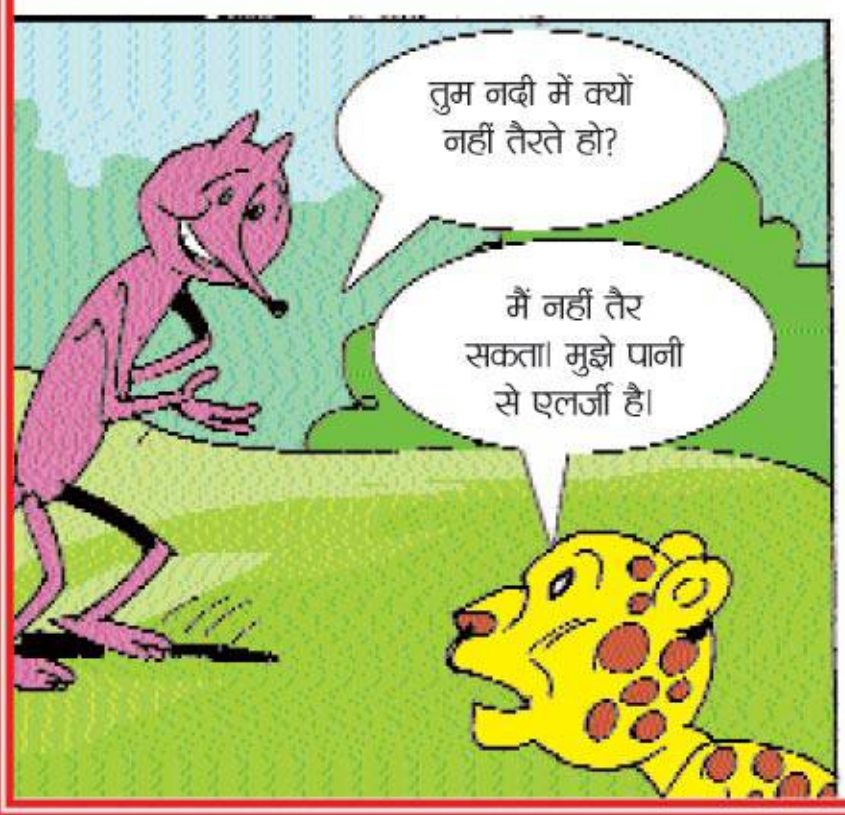

मेरे पास एक आइडिया है। मुझे पता है, उसे पानी में कैसे उतारना है।
बहुत बढ़िया, बस वह एक बार नदी में उतर जाये। उसके बाद मैं उसे तैरना सिखा दूंगा।
भीखू, देखो।
यह क्या है?
इसे कैमरा कहते हैं। मैं इससे तुम्हारी फोटो ले सकता हूं।
वाह!
क्या तुम मेरी फोटो ले लोगे, प्लीज। मैं मेरी फोटो को अपनी गुफा के सामने लगाऊंगा।
हां, हां, क्यों नहीं...
उस चट्टान पर खड़े हो जाओ।
ठीक है।
थोड़ा पीछे जाओ।

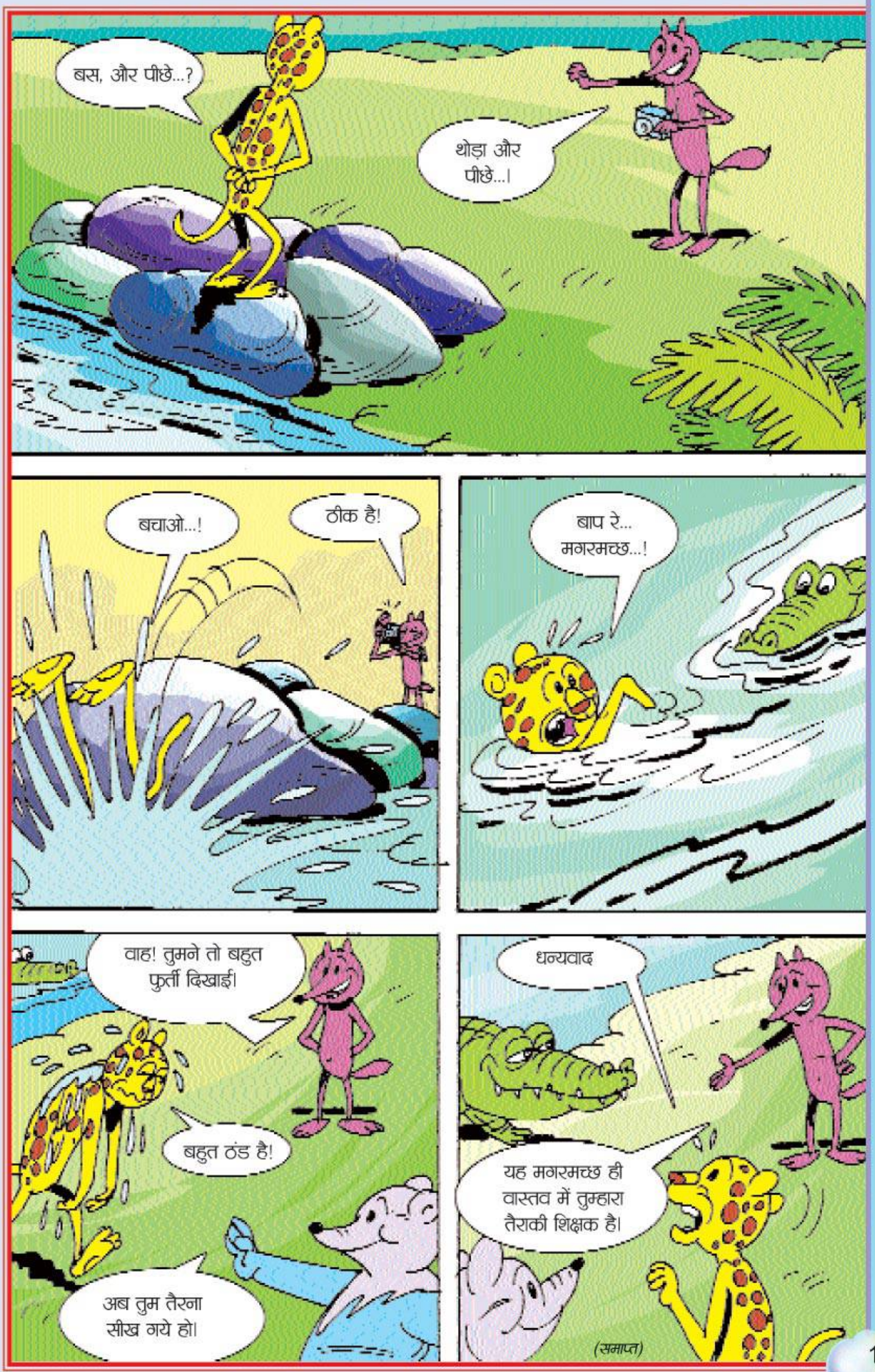
बस, और पीछे...?
थोड़ा और पीछे...।
बचाओ...!
ठीक है!
बाप रे... मगरमच्छ...!
वाह! तुमने तो बहुत फुर्ती दिखाई।
बहुत ठंड है!
अब तुम तैरना सीख गये हो।
धन्यवाद
यह मगरमच्छ ही वास्तव में तुम्हारा तैराकी शिक्षक है।
(समाप्त)

खोज-बीन

ङ	म	रे	रा	क	ता	से	न	भी	द्रो
धू	उ	ज	री	अ	म्बा	अ	बां	प	णा
प	क्र	त्त	ह	ल	बे	नू	म्बि	ब	चा
र	प्र	दं	रा	म	ड़	ज	व	का	र्य
शु	रे	बि	भ	गां	घ	का	ग	अं	ले
रा	प	का	वि	धा	धा	कृ	ढ़	जा	र
म	र	पा	र	री	टे	क	ष्ण	ड	र्ण
फ	झ	ल	म	का	रे	श्र	र	क	सां
अ	ष्म	भी	ए	क	ल	व्य	ह	र	ची
भी	अ	बे	ल	छा	ला	म	मू	री	द

कैसे हल करें

इस ग्रिड में महाभारत के 10 पात्रों के नाम दिए गए हैं। नाम बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे और तिरछे हो सकते हैं।

दा	ला	ग	ण	स	र	या	श	ब	री
घ	र	ष	स	लू	गी	क	ज	र	ग
म	भी	गा	ह	म्पा	वी	नू	बा	ब	व
वि	चं	दं	मं	दे	ती	ण	व	लि	यु
इ	रे	ज	न	दो	ब	का	र	टा	झू
र	प	मा	श	रा	द	री	ज	जा	थ
श	नु	पा	ना	खी	जा	री	तू	र्ण	जी
ह	फ	की	म	व	र	म्ब	क	की	द
अ	ये	भा	ग्री	व	त	म्भ	वं	उ	फ
स	ज	सु	उ	थ	कु	श	ह	त	जा

कैसे हल करें

इस ग्रिड में रामायण के 10 पात्रों के नाम दिए गए हैं। नाम बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे और तिरछे हो सकते हैं।

हल

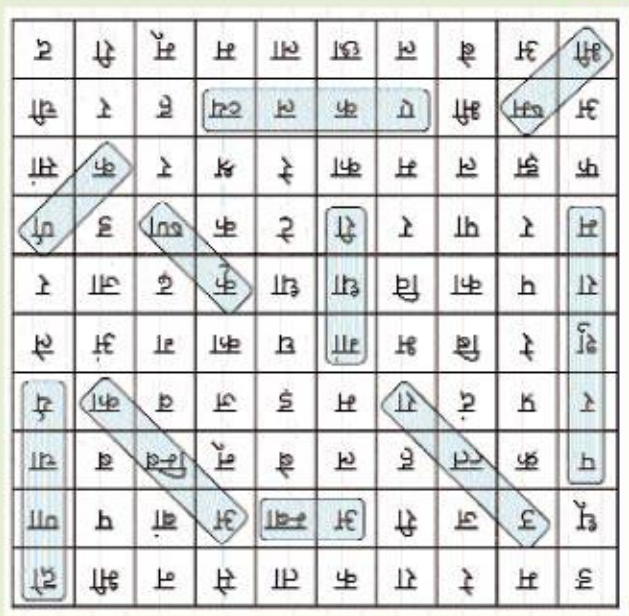

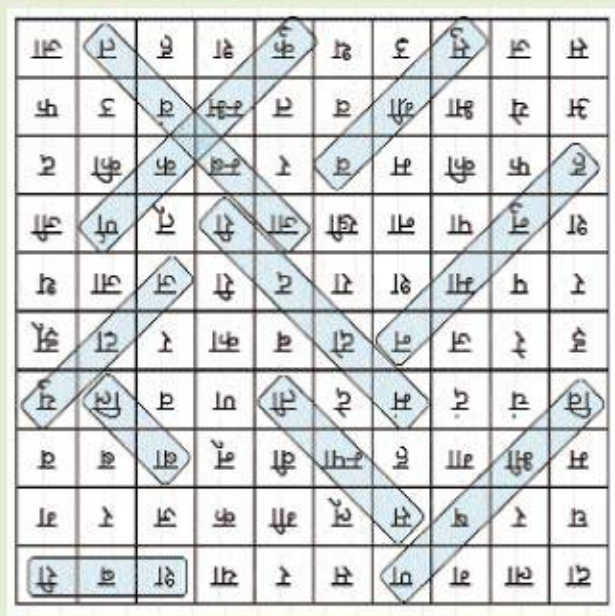

बूझो तो...!

1. एक हाथ है लकड़ी की डंडी
बने हुए हैं इसमें आठ घर
ज्यों-ज्यों हवा जाए उस भवन में
त्यों-त्यों निकले हैं मीठे स्वर।

2. देहली पर तेरे बैठा हूं मैं
करने को मैं रखवाली।
बताओ भैया साथ ले गए
क्यों मेरी है घरवाली।

3. पैरों में जंजीर पड़ी है, फिर
भी दौड़ लगाए
पगडंडी पर चले झूम के,
मंजिल तक पहुंचाए।

4. डब्बे पर डब्बा
डब्बे का गांव
चलती फिरती बस्ती है
लोहे के पांव।

5. राजा के महल में
रानी पचास
सिर पटके दीवार से जल
कर होए राख।

6. एक कहानी मैं कहूं
सुन ले मेरे पूत
बांध गले में उड़ गई
हाथ में रह गया सूत।

उत्तर

1. बांसुरी
2. तालाब
3. साइकिल
4. रेलगाड़ी
5. माचिस
6. पतंग

ठिकाना तो बताना

ज्वालामुखी

-पंकज राय

एक अरसे के बाद जोजो जिराफ अपने दोस्त डाइनो से मिलने आया।

डाइनो बहुत दिनों से तुम्हारी कोई खबर नहीं मिली, इसलिए मिलने चला आया।

जोजो और डाइनो बातों में मशगूल हो गये।

यार जोजो, ये तुमने बहुत अच्छा किया। मुझे भी तुमसे मिलने का मन कर रहा था।

अचानक दूर एक भयानक घटनाक्रम देखकर जोजो चीख पड़ा।

यार जोजो, देख वहां क्या हो रहा है? समुद्र और पहाड़ से आग की लपटें निकल रही हैं।

जोजो जिराफ सच कह रहा था। दूर पहाड़ एवं समुद्र से विचित्र लपटें निकल रही थीं। जोजो को तो अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। इस भयानक दृश्य को देखकर जोजो डर गया।

जोजो को भयभीत होते देख डाइनो ने उसे हंसते हुए समझाया।

यार जोजो तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। शायद तुम ज्वालामुखी को पहली बार देख रहे हो। मैं तुम्हें ज्वालामुखी के बारे में बताता हूं। करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी का जन्म सूर्य के चक्कर काटते ऊष्ण गैसीय धूलकणों से हुई। समय बीतने के साथ पृथ्वी ठंडी होती गई और आज यह ठोस चट्टान की गेंद की भांति नजर आती है।

जब पृथ्वी ठंडी हुई तो इसके गहरे भागों में जल भर गया। गर्मी के कारण इस जल से वाष्प बना। फिर बादल और इस प्रकार बरसात शुरू हो गई। अनुकूल जलवायु मे सूक्ष्म जीव पनपने लगे और फिर जीवों का विकास शुरू हो गया। आज पृथ्वी हमें ठंडी लगती है। पर इसके केन्द्र में आज भी करोड़ों वर्ष पूर्व की ऊष्मा समाई हुई है। पृथ्वी कई परतों में विभक्त है एवं परतों के साथ तापमान बढ़ता जाता है।

पृथ्वी के केन्द्र में द्रविभूत लोहे का विशाल गोला है, जिसका तापमान 5000 डिग्री से भी अधिक है। जबकि पृथ्वी की सतह का तापमान मात्र 10 से 34 डिग्री सेल्सियस के बीच है।

कभी-कभी चट्टानों के बीच दरार पड़ जाने से यह पिघला हुआ मैगमा पृथ्वी की सतह तक आकर ज्वालामुखी के रूप में फूट पड़ता है। इस प्रक्रिया में चट्टानों में कंपन होता है। कभी-कभार भूकंप के झटके भी सतह पर महसूस किये जाते हैं।

ज्वालामुखी को सक्रिय, सुप्त और मृत श्रेणियों में बांटा गया है। सुप्त ज्वालामुखी कभी-कभार ही क्रियाशील होते हैं। मृत ज्वालामुखियों में सक्रियता पूर्णतः समाप्त हो जाती है। सुप्त और मृत ज्वालामुखियों की संख्या हजारों में हैं। पृथ्वी पर लगभग 850 सक्रिय ज्वालामुखी हैं। इनमें से लगभग 80 सागर के अंदर हैं। विश्व के दो तिहाई सक्रिय ज्वालामुखी प्रशांत महासागर के तटों पर हैं, इसलिए इसे पैसिफिक रिंग और फायर भी कहा जाता है।

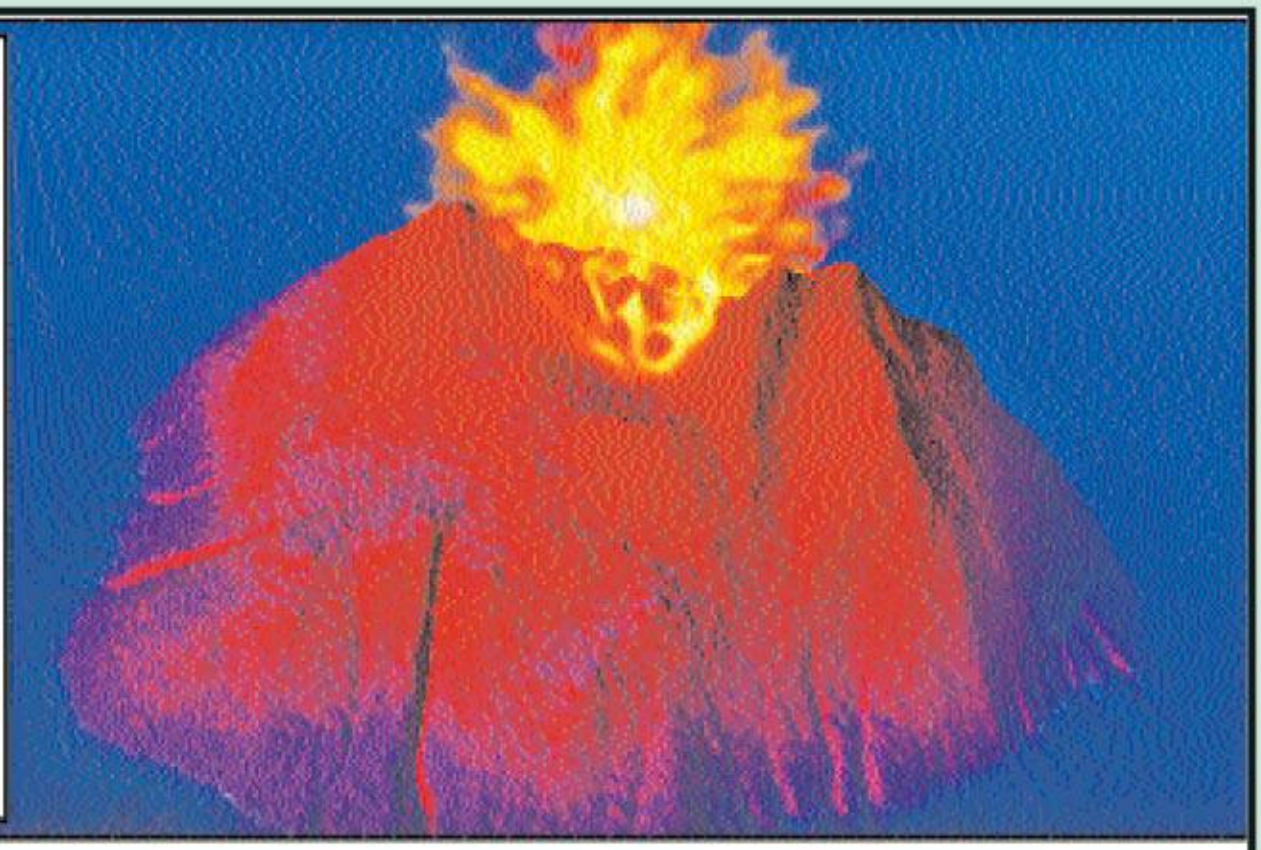

ज्वालामुखी से निकले लावा में मुख्यतः सिलिका, लौह, मैग्नीशियम आदि तत्त्व होते हैं। सिलिकायुक्त लावा जल्दी से ठोस होकर जम जाता है। वहीं लौह से समृद्ध लावा बहुत दूर बहने के बाद ठोस होता है।

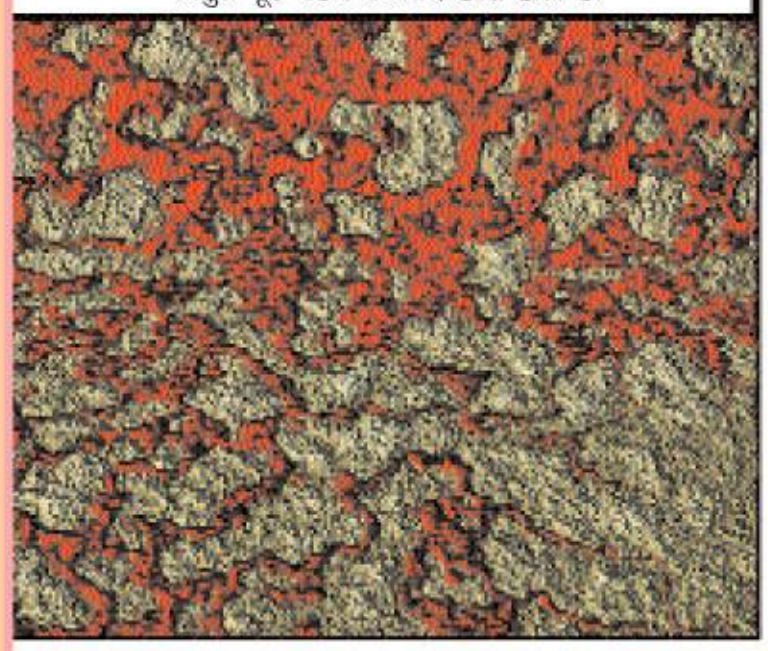

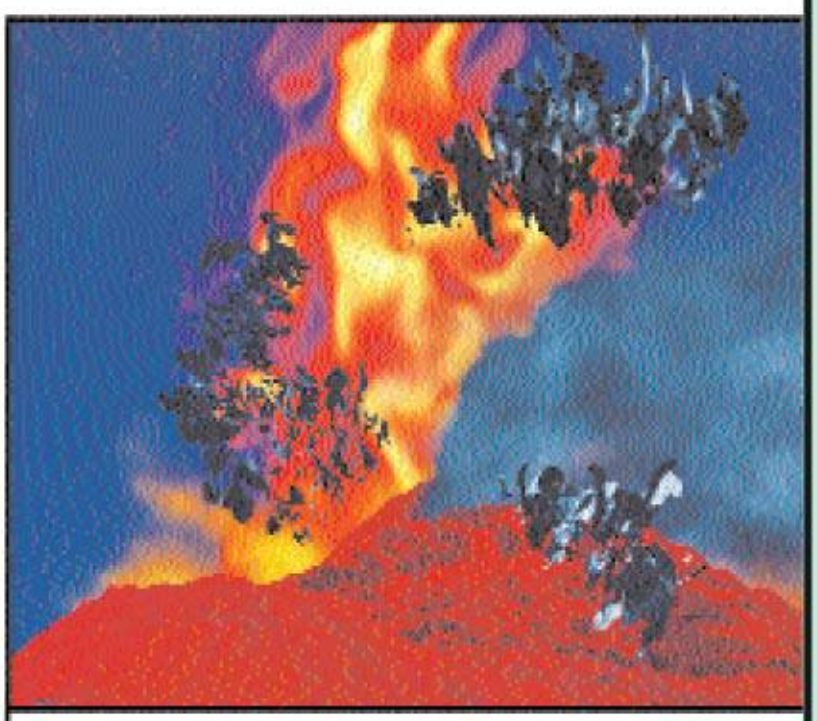

ज्वालामुखियों से निकले राख, गैस इत्यादि प्राणियों के लिए बहुत घातक होते हैं।

अधिकतर ज्वालामुखी कार्बन डाईऑक्साइड गैस उत्सर्जित करता है। पर सोलफटरा नामक ज्वालामुखी गंधयुक्त गैस उत्सर्जित करता है।

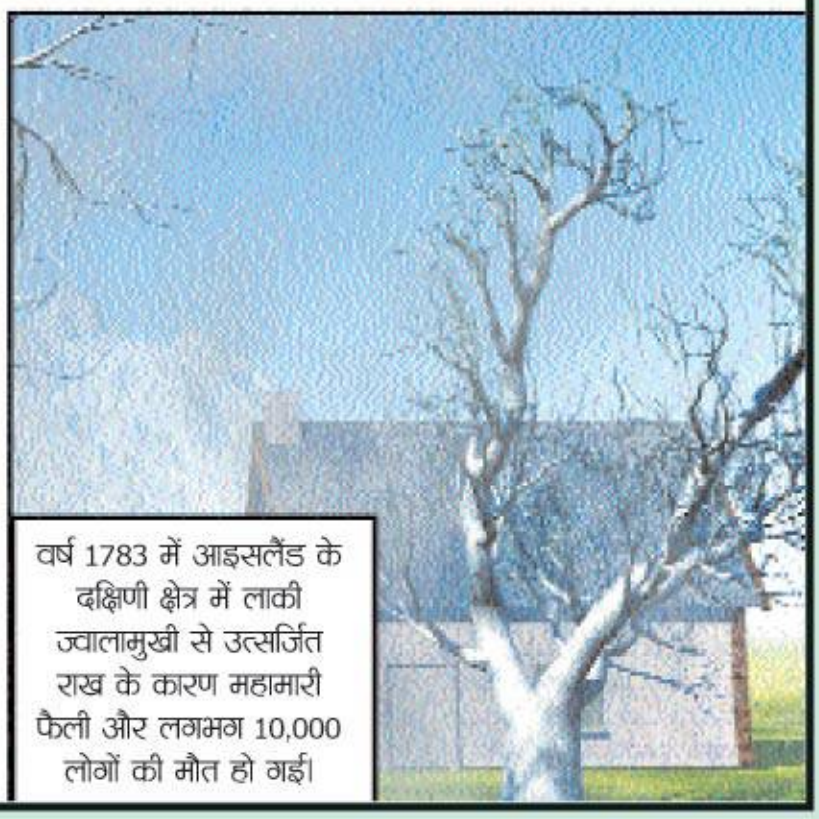

वर्ष 1783 में आइसलैंड के दक्षिणी क्षेत्र में लाकी ज्वालामुखी से उत्सर्जित राख के कारण महामारी फैली और लगभग 10,000 लोगों की मौत हो गई।

क्या ज्वालमुखियों से हमेशा नुकसान ही होता है?

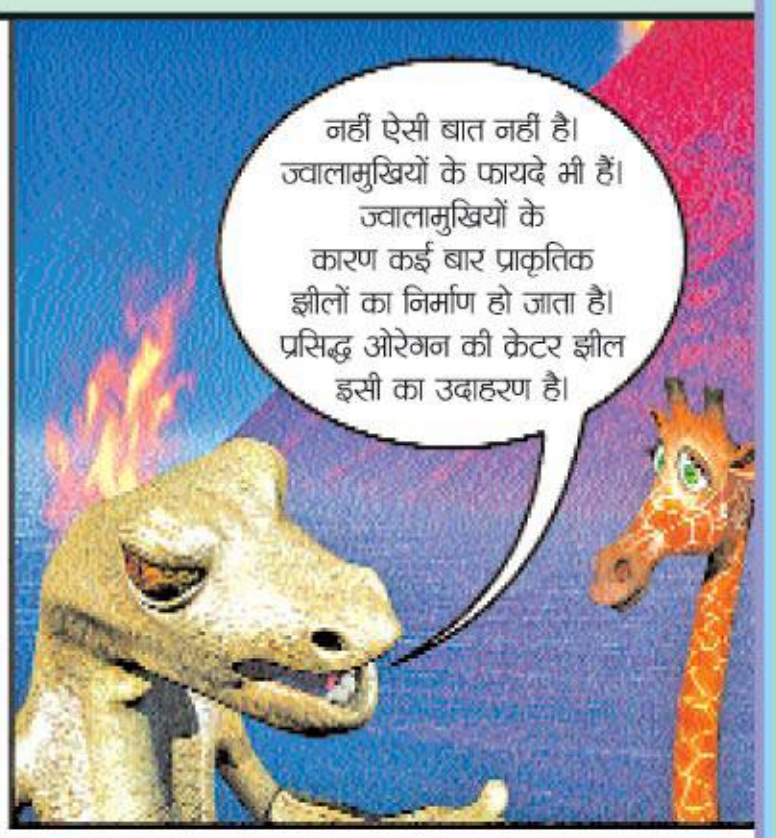
नहीं ऐसी बात नहीं है। ज्वालामुखियों के फायदे भी हैं। ज्वालामुखियों के कारण कई बार प्राकृतिक झीलों का निर्माण हो जाता है। प्रसिद्ध ओरेगन की क्रेटर झील इसी का उदाहरण है।

ज्वालामुखियों के लावा से नये-नये द्वीपों का निर्माण होता है। आइसलैंड में कहीं-कहीं ज्वालामुखियों के कारण गर्म पानी के स्रोत बन गये हैं। इनसे रुक-रुक कर भाप के साथ पानी का फव्वारा निकलता है। जिसे गीजर कहते हैं।

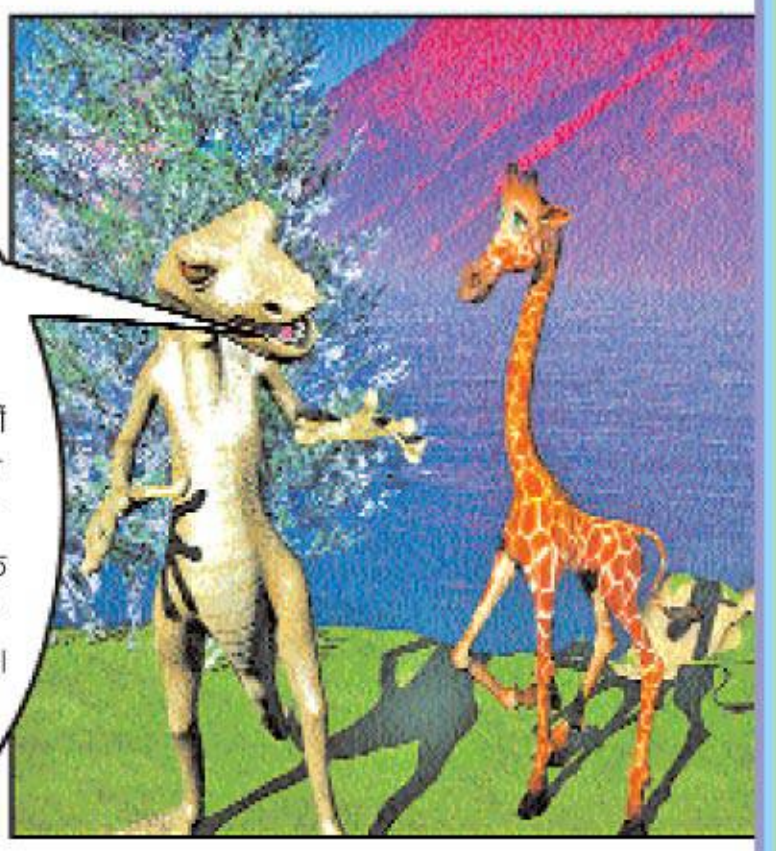

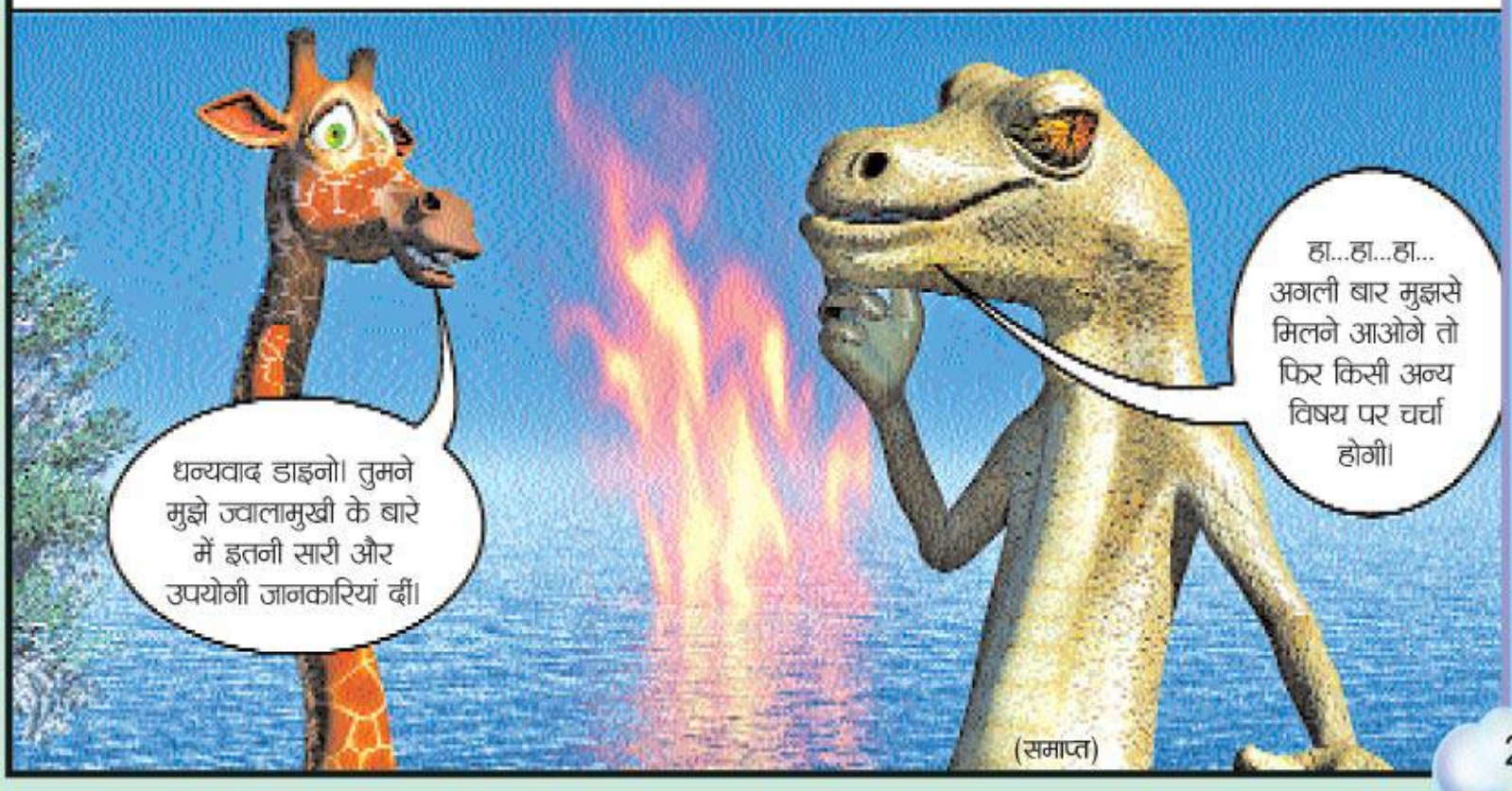
धन्यवाद डाइनो। तुमने मुझे ज्वालामुखी के बारे में इतनी सारी और उपयोगी जानकारियां दीं।
हा...हा...हा... अगली बार मुझसे मिलने आओगे तो फिर किसी अन्य विषय पर चर्चा होगी।
(समाप्त)

बरसात बादलों के आसपास बर्फ के क्रिस्टल के रूप में शुरू होती है।

हल्की बरसात एक घंटे में 0.10 इंच से भी कम के रूप में वर्गीकृत की जाती है।

भारी वर्षा को एक घंटे में 0.30 इंच से अधिक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

वर्षा की बूंदों का आकार 0.02 इंच से लगभग 0.31 इंच तक होता है।

टिप टिप बरसा पानी

वर्षा की बूंदें गोल होती हैं, लेकिन गुरुत्वाकर्षण के कारण अंडाकार दिखाई देती हैं।

यू.एस. के लुसियाना को सबसे गीले राज्य के रूप में जाना जाता है। यहां हर साल 56 इंच बरसात होती है।

बरसात की बूंदें 11 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से गिरती हैं। अधिकतम बरसात की बूंदें एक घंटे में 22 मील की गति से भी गिर सकती है।

बरसात के जमीन पर आने से पहले इसे फ्रोजन रेन के नाम से जाना जाता है।

अब तक सबसे ज्यादा वर्षा एक मिनट में 1.5 इंच ब्रस्ट-गोडेलोप, वेस्टइंडीज में 26 नवम्बर, 1970 में रिकॉर्ड की गई।

बरसात वाष्प के जरिये तालाबों, झीलों, नदियों, समुद्रों के पानी को रिसाइकल करती है।

इंद्रधनुष बरसात के अलावा, वाटरफॉल और समुद्र में बनने वाली बड़ी लहरों के पास भी दिखाई पड़ता है।

इंद्रधनुष यानी रेनबो बनने के कारणों का उल्लेख सबसे पहले वर्ष 1236 में एक पर्सियन खगोलविद् कुतुब-अल-दिन-सिराजी ने किया था।

रेनबो से हमारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

रेनबो सात रंगों यानी लाल, नीला, नारंगी, पीला, हरा, गहरा नीला (इंडिगो) और बैंगनी रंग से बना होता है।

रेनबो शांति और मधुर संबंधों का वैश्विक प्रतीक है।

रेनबो निर्माण में सूर्य-वर्षा का मेल होता है।

रेनबो लाखों पानी की बूंदों के प्रकाश अपवर्तन से बनता है।

रेनबो का वास्तविक रूप गोल होता है।

रेनबो वर्षा की बूंदों पर पड़ने वाली सूर्य की किरणों के डिस्पर्सन यानी फैलाव के कारण बनता है। जब सूर्य की किरणें वर्षा की बूंदों में प्रवेश करती हैं, तो वे रिफ्लेक्ट यानी तिरछी हो जाती हैं। फिर बूंदों से निकलते समय लाइट रिफलेक्ट यानी कि प्रतिबिंब बनाती हैं। अर्थात सूर्य की किरणें कई कोणों पर रिफ्लेक्ट करती हैं, जिसकी वजह से रेनबो बनता है।

रेनबो की सबसे बाहरी परत लाल रंग की होती है, और सबसे अंदर की ओर बैंगनी रंग की परत होती है।

जब पृथ्वी के वातावरण में बारिश की छोटी-छोटी बूंदों पर सूर्य की रोशनी पड़ती है, तो आकाश में लाइट का प्रतिबिंब (स्पेक्ट्रम) बनता है, जो कई रंगों वाले धनुष का रूप ले लेता है।

रेनबो बोले तो....

छाता मन भाता

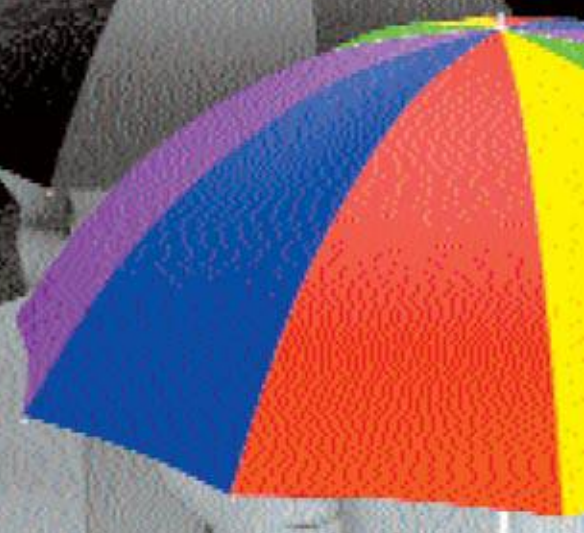

शुरुआत में यूरोपीय छाते लकड़ी और व्हेल मछली की हड्डियों से बनाए जाते थे। इस ढांचे पर आयल कैनवास चढ़ाया जाता था।

छाते का आविष्कार आज से करीब चार हजार साल पहले हुआ था।

अंग्रेजी के अम्ब्रेला शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द अम्बरा से हुई, जिसका अर्थ होता है- छाया।

छातों का इस्तेमाल भारत के साथ-साथ मिस्र, यूनान और चीन में भी प्राचीन समय से ही किया जाता था।

छाते का आविष्कार मूलतः सूर्य की रोशनी से बचाव के लिए हुआ था।

शुरुआत में छातों को महिलाओं के एक सौंदर्य उपकरण के रूप में देखा जाता था।

वर्ष 1852 में सैम्यूअल फॉक्स ने छाते के लिए इस्पात के ढांचे का आविष्कार किया। इसके बाद अमरीकी आविष्कारक विलियम सी. कार्टर ने 8 अगस्त, 1885 को छाते के ढांचे का पहला पेटेंट कराया। इसके एक सदी बाद छोटे और बंद हो सकने वाले छाते आए।

छातों की पहली दुकान जेम्स स्मिथ एंड संस नाम से वर्ष 1830 में खुली। यह दुकान आज भी न्यू ऑक्सफोर्ड सेंट लंदन में स्थित है।

चीनियों ने सबसे पहले अपने छातों को बारिश से सुरक्षा प्रदान करने का उपकरण बनाने के लिए उन्हें जलरोधी बनाया था। इसके लिए उन्होंने छाते पर मोम की परत चढ़ाई।

इतिहास के अनुसार फारसी यात्री और लेखक जोनास डानवे (वर्ष 1712-86) ने पहली बार इंग्लैण्ड में सार्वजनिक रूप से तीस साल तक छाते का इस्तेमाल किया और उन्होंने छाते को लोकप्रिय बनाया। आज भी अंग्रेज अपने छातों को 'डानवे' कहते हैं।

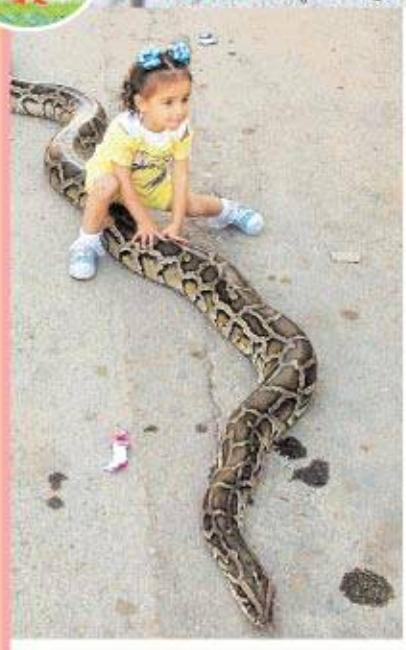

अजगर की सवारी

अगर कोई बड़ा सांप या अजगर आस-पास हो, तो शायद ही कोई अपने बच्चों को उसके पास जाने देगा। लेकिन फिलिस्तीन के रामल्लाह में दूसरा ही नजारा दिखा। वहां के जमाल अमवासी की दो साल की बेटी एक विशालकाय अजगर की सवारी करती है। उसके दूसरे बच्चे भी बड़े सांपों और अजगरों के साथ खूब समय बिताते हैं। दरअसल जमाल सांपों के शौकीन हैं और उन्होंने अपने घर के बगल में ही इनके लिए शेड बनवा रखा है। इसमें एक दर्जन से ज्यादा अलग-अलग वैरायटी के सांप है। जमाल के लिए ये फैमिली मेंबर की तरह हैं। इनसे वह सुबह-शाम मिलते हैं। उनके लिए खाने और दूसरी जरूरी चीजों का भी इंतजाम करते हैं। उन्हें सांपों की कई प्रजातियों के बारे में जानकारी भी खूब है।

मधुमक्खियों ने किया कैद

अमेरिका में एक पुलिस वाले पर ध् हजार मधुमि□खयों ने अचानक हमला कर दिया कि वह गाड़ी में ही घंटों कैद हो गया। उ□ारी कैलोरिना में फ्क वर्षीय डिप्टी ब्रेंनडन जेन्किंस जब अपनी पेट्रोल कार के पास खड़े थे, तभी मधुमि□खयों ने हमला कर दिया। ये मधुमि□खयां एक टेलर में रखे मधुमि□खयों के म बॉ□सों से निकली थीं, जिसे एक भारी वाहन ले जा रहा था। कुछ मधुमि□खयां जेन्किंस की कार में भी घुस गई थीं और उन्होंने जेन्किंस को काट भी लिया। उसने कार चलाने की कोशिश की, लेकिन कार चलाना तो दूर, वह मधुमि□खयों को हटा तक नहीं पाए। इसके बाद पुलिस ने दो मधुम□खी पकड़ने वालों को बुलाया। उन्होंने धुएं और मीठे पानी के सहारे मधुमि□खयों को काबू किया। उन्होंने कहा कि मधुमि□खयां पुलिस की

कचरे से बना होटल

होटल की बात करने पर बड़ी, ऊंची और आलीशान इमारतों का खयाल आता है। लेकिन इटली की राजधानी रोम में

सिर्फ कूड़े से होटल बनाया गया है। कूड़े से बना यह दुनिया का पहला होटल है, जिसे लोगों के लिए खोल भी दिया गया है। इस होटल की दीवारें आमतौर पर बने मकानों की दीवारों से ऊंची हैं और उसे यूरोप के समुद्र के तटों पर पाए गए क्ख टन कचरे से बनाया गया है। कचरे में खिलौने, किताबें, प्लास्टिक के डि□बे, कार की खराब पाइपें, जूते और यहां तक कि दीवारों को बनाने के लिए प्लास्टिक के बने पुतलों के पैरों का प्रयोग किया

सबसे बड़ा पूल

दक्षिण अमेरिकी देश चिली में बनाए गए सबसे बड़े स्विमिंग पूल को देखकर यह नहीं लगता है कि यह कोई पूल है। यह अपने आप समंदर का सामना करता नजर आता है। स्विमिंग पूलों के सामने यह वाकई समंदर ही है। यह एक हजार यार्ड से भी ज्यादा लंबा है। लगभग क्क फीट गहरा होने के साथ ही इसमें म म लाख गैलन पानी समा सकता है। इसका पानी इतना साफ है कि इसके गहरे होने के बावजूद इसके तल तक आसानी से देखा जा सकता है। गहरे में तैरने वालों के लिए यहां पूरा फन है। इसमें ट्यूब बेड पर आप आराम करने के साथ गहरे में तैराकी का आनंद भी ले सकते हैं। इस पूल को मॉनीटर करने के लिए क□प्यूटर ऑपरेटेड एक खास सिस्टम तैयार किया गया है, जो इसके रख-रखाव की पूरी खबर रखता है। इसके खुलते ही देखने के लिए भारी

नूरा कुश्ती

एक गांव में मल्लयुद्ध का आयोजन हुआ। अंतिम विजेता को जीत पर पांच सौ सोने की मोहरें पुरस्कार में देने की घोषणा की गई। कुश्ती में बाहर का एक युवा पहलवान और उसी गांव का एक अधेड़, पर अनुभवी पहलवान भी पहुंचा। गांव के अधेड़ पहलवान को अपनी हार सामने दिखाई दे रही थी। साथ ही, अपने गांव में होने वाली हार की हंसी भी उसे विचलित कर रही थी। फिर भी उसने अपना धीरज नहीं खोया। कुश्ती प्रार□भ हुई। गांव वाले पहलवान ने बाहरी पहलवान से धीरे-से कान में कहा- 'यदि तुम हार जाओगे तो मैं तु□हें एक हजार मोहरें दूंगा।' बाहरी पहलवान सोचने लगा कि जीतने पर पांच सौ और हारने पर हजार मोहरें! उसने सोचा हारने में ही लाभ है। वह जानबूझकर खुद ही चि□ा हो गया।

गांव के पहलवान को लोगों ने कंधे पर उठाकर उसका स□मान किया और पुरस्कार की राशि प्रदान की। सभी अपने-अपने घर लौट गए। हारा हुआ पहलवान विजेता पहलवान के पास पहुंचा और हजार मोहरें मांगीं। इस पर गांव के पहलवान ने कहा- 'भाई कौन सी मोहरें? □या बात करते हो? तुम अपना दांव लगाकर जीतते हो और मैं अपना दांव लगाकर। तु□हें एक हजार का प्रलोभन देना भी मेरा एक दांव था।' बेचारा बाहरी पहलवान अपना मुंह लेकर चला गया। अब

पिनेंग

मलेशियाई शहर पिनेंग का एरिया बहुत ज्यादा न होने की वजह से कम समय में ही यहां के पर्यटन स्थलों पर घूमा जा सकता है। हां, यह बात और है कि प्राकृतिक खूबसूरती से भरपूर इस छोटे से द्वीप में सुकून की तलाश चाहने वालों को महीनों का वक्त भी कम लग सकता है। यहां देखने के लिए पार्क, गार्डन, धार्मिक स्थल, फोर्ट सहित बहुत कुछ हैं। इस बार चलते हैं पिनेंग की सैर पर।

बटरफ्लाई पार्क

रंगबिरंगी तितलियों की तमाम वैरायटी के अलावा, पेड़-पौधों पर जीने वाले अन्य जंतुओं को एक ही छत के नीचे देखना शानदार अनुभव है। किताबों में पढ़े जाने वाले पिचर प्लांट को भी आप यहां देख सकते हैं। एनिमल लाइफ में रुचि रखने वाले लोगों के लिए यह एक बेहतरीन जगह है।

ट्रॉपिकल स्पाइस गार्डन

बटर□लाई पार्क के करीब ही है स्पाइस गार्डन। यहां आपको तमाम तरह के मसालों के पौधे मिलेंगे। स्पाइस गार्डन में घुसने से पहले वहां मौजूद केयरटेकर से मच्छरों और अन्य छोटे कीड़ों से बचाव के लिए लोशन लेना न भूलें, नहीं तो गार्डन घूमने का मजा किरकिरा हो सकता है। आप चाहें तो गार्डन में मौजूद स्टोर से अपने लिए खुशबूदार मसाले खरीद भी सकते हैं।

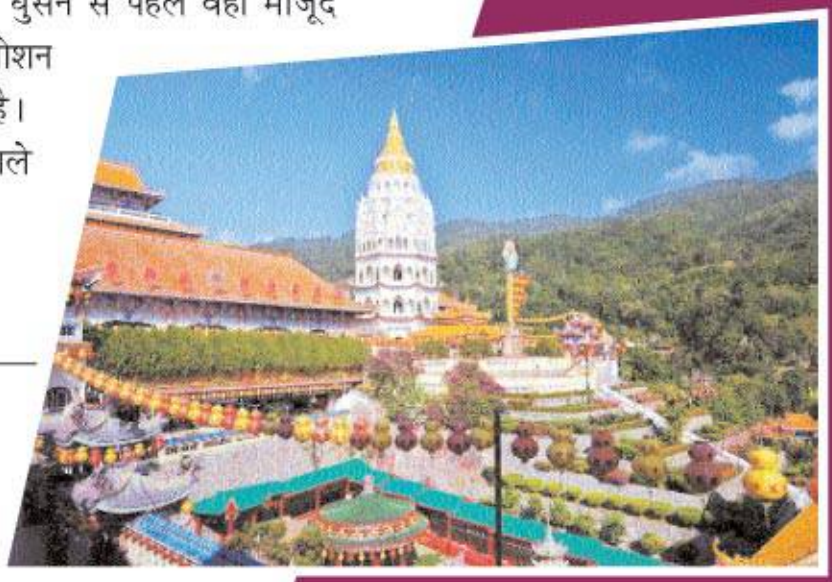

थाई और बर्मीज बौद्ध मंदिर

चीनी बौद्ध मंदिर केक लॉक सी के अलावा पिनांग में थाई और बर्मीज बौद्ध मंदिर भी हैं। ये दोनों मंदिर बिल्कुल एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। दोनों मंदिर गौतम बुद्ध के हैं। लेकिन उनमें अंतर है। थाई मंदिर में जहां गौतम बुद्ध की लेटी

सैर सपाटा

इंडिया स्ट्रीट

फोर्ट कॉर्नवॉलिस के बाद आप इंडिया का रुख कर सकते हैं। दरअसल, हम पिनेंग स्थित इंडिया स्ट्रीट की बात कर रहे हैं। इंडिया स्ट्रीट आते ही आपको लगेगा कि आप साउथ इंडिया में हैं। यहां शॉपिंग करें, साथ ही इंडियन फूड का मजा भी लें।

बीच

साउथ चाइना सी के खूबसूरत बीच पर उठती-गिरती लहरों के बीच सुकून के कुछ हसीन पल तलाश सकते हैं। फोटॉग्राफी के शौकीन सनसेट का इंतजार कर सकते हैं। एडवेंचर पसंद है, तो पैरासेलिंग भी की जा सकती है।

बाटू फिरंगी नाइट मार्केट

पिनेंग की नाइट लाइफ का रोमांचक अनुभव। देश आने पर अपनों को देने के लिए छोटे-छोटे आइटम यहां सस्ते दामों में खरीदे जा सकते हैं।

खू कोंगसी

कोंगसी चीन के एक खास वंश की बिल्डिंग को कहा जाता है। जिसे मंदिर

केक लॉक सी टेंपल

यह साउथ ईस्ट एशिया की इस शानदार मोनेस्ट्री का मुख्य आकर्षण है। यहां के पगोडा तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों की मदद से ऊपर जाना होता है।

चीनी वास्तु कला के अद्भुत नजारे को पेश करते इस मंदिर में गौतम बुद्ध की विशालकाय मूर्तियों के नजदीक बैठकर एक अलग तरह की शांति और सुकून का अहसास होता है।

चियॉन्ग फैट जी मेंशन

चाइनीज वास्तु के आधार पर बनाए गए इस मेंशन को पिनेंग का एक मह□वपूर्ण टूरिस्ट प्लेस माना जाता है। घर की हर चीज को बारीकी से जानने के लिए आपके पास कम से कम एक घंटे का व□त होना चाहिए।

फोर्ट कॉर्नवॉलिस

छोटे से एरिया में बना फोर्ट कॉर्नवॉलिस वह जगह है, जहां वर्ष क्स्त्रत्त्- में पिनांग का संस्थापक लॉर्ड फ्रांसिस लाइट पहली बार आया था। अलब□ा किले के बाहर ट्राइशॉ राइडिंग का अनुभव जरूर मजेदार है।

माधवी की नथ

किसी नगर में माधवी नाम की एक स्त्री रहती थी। उसे नथ पहनने का बड़ा शौक था। पर वह किसी न किसी कारणवश लंबे समय से यह शौक पूरा नहीं कर पा रही थी, ज्योंही उसे उचित अवसर मिला उसने एक सुनार से सुंदर सी नथ बनवा ली।

माधवी ने नथ पहनी तो फूली न समाई। फिर तो वह घर-बाहर सभी जगह नथ और सुनार की प्रशंसा के पुल बांधती फिरती। कुछ दिन तक तो लोगों ने उसकी प्रशंसा को झेला, लेकिन वे ऊबने लगे। खिल्ली उड़ाते, लेकिन माधवी पर होता। उसका नथ और सुनार की रुकता।

एक दिन वह मंदिर गई। वहां करते थे। उन्हें भी माधवी ने अप सुनाया। इस पर पंडितजी हंस पड़े बोली- 'आप हंसे यों?' पंडित

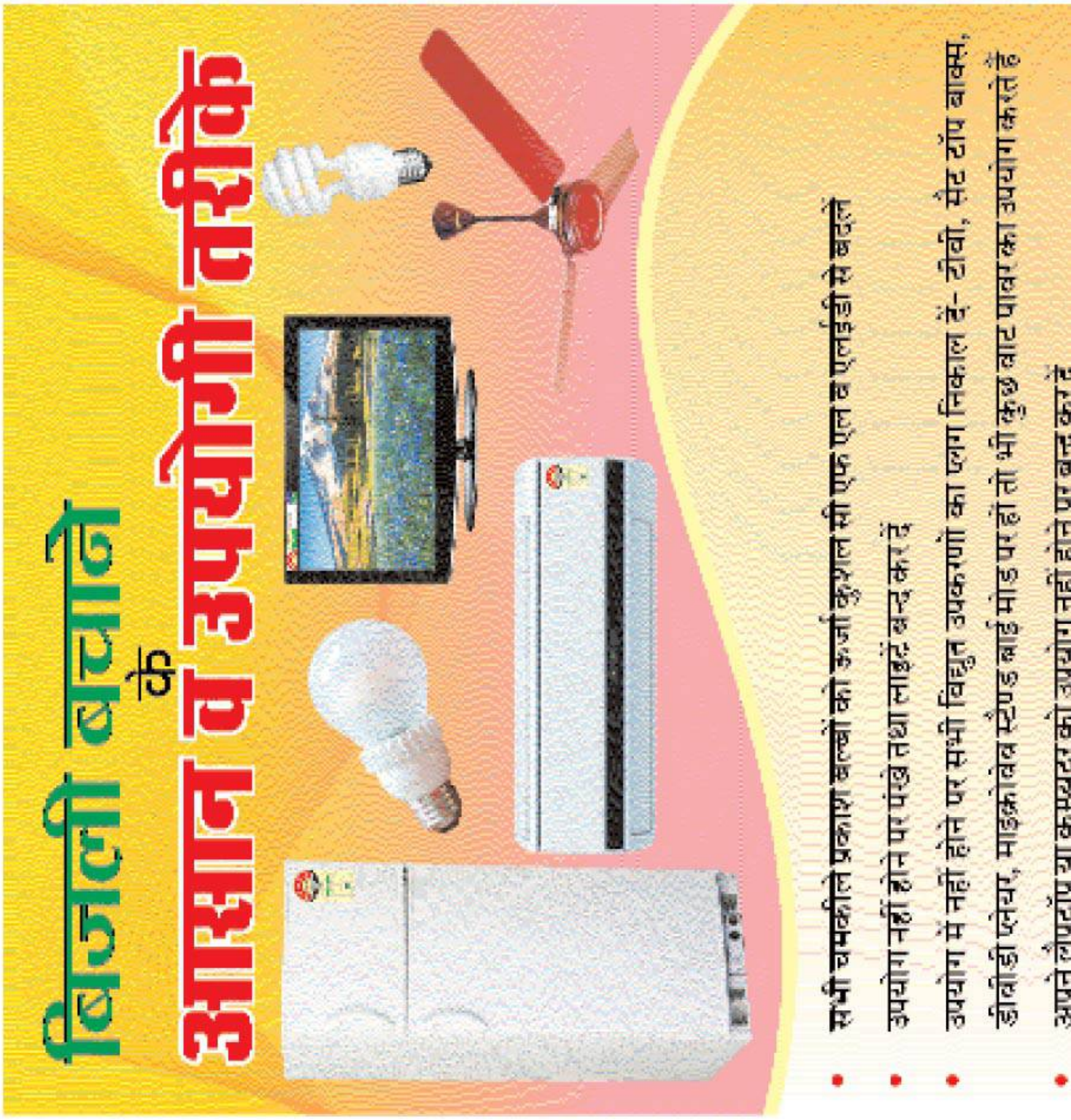

उसके मुंह पर ही
र उसका कोई असर न
प्रशंसा का गीत गाना न

ं एक पंडितजी भी आया
नी नथ का यश-गान
ड़े। माधवी चिढ़ गई।
जी बोले- 'तु□हारी

नादानी पर।'

'कैसी नादानी?' माधवी गुस्से में बड़बड़ाई। पंडितजी ने कहा- 'तु□हें भगवान ने नाक दी है, जिसमें तुम नथ पहनती हो। नाक प्रभु की नियामत है। नाक के कारण ही तो तुम अपना नथ पहनने का शौक पूरा कर पा रही हो। तुम उसकी तो प्रशंसा करती नहीं हो, नथ की प्रशंसा करती हो, जिसकी नाक की तुलना में कोई कीमत नहीं है।' माधवी का सिर शर्म से झुक गया। इस घटना

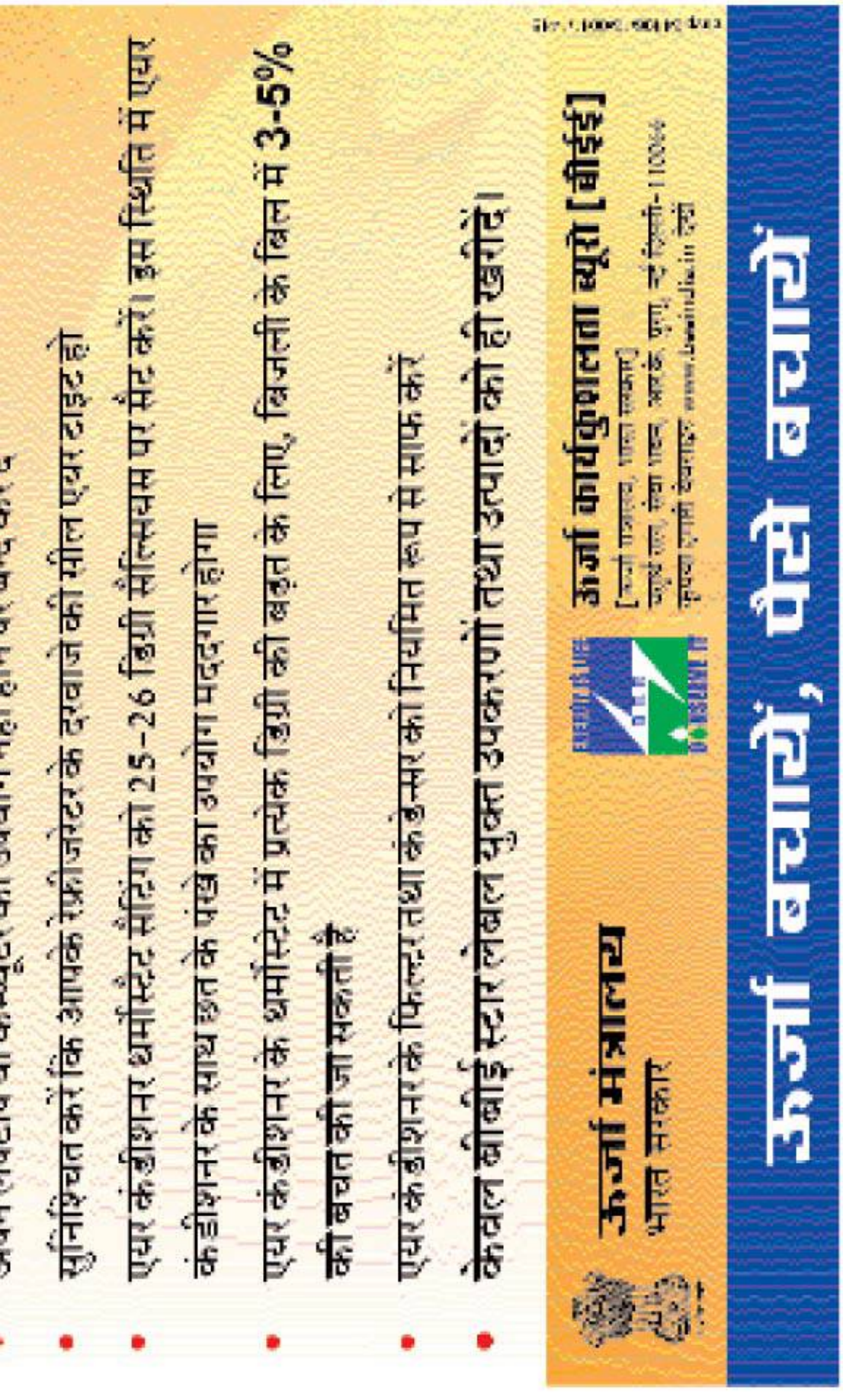

विदूषक

चीन में एक युवा साधक रहता था। वह ध□म के पथ पर बहुत गंभीरता से अग्रसर था।

एक बार इस युवा साधक के सामने कोई ऐसा विषय आ गया जो उसे समझ में नहीं आया। वह अपने गुरु के पास समस्या लेकर पहुंचा। गुरु ने जब साधक का प्रश्न सुना तो वह जोर-जोर से हंसने लगे और हंसते-हंसते ही उठकर चले गए।

युवा साधक अपने गुरु की ऐसी प्रतिक्रिया से बहुत विचलित हो गया। वह तीन दिनों तक खा-पी न सका और उसकी नींद भी उड़ गयी। तीन दिनों के बाद वह गुरु के पास गया और अपनी दशा का वर्णन किया।

गुरु उसकी बातें सुनकर बोले, 'पुत्र, तुम जानते हो तु□हारी समस्या □या है? तु□हारी समस्या यह है कि तुम एक विदूषक से भी गए-बीते हो!' युवा साधक को यह सुनकर बहुत बड़ा आघात पहुंचा। वह अश्रुपूरित नेत्रों से बोला, 'आदरणीय, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? मैं किसी विदूषक से भी गया-बीता कैसे हो सकता हूं?'

गुरु ने कहा, 'कोई विदूषक जब लोगों को प्रसन्न और हंसते हुए देखता है तो उसे खुशी मिलती है। और तुम? तुम तो किसी दूसरे व्यि□त को हंसते देखकर विषादग्रस्त ही हो गए? अब बताओ, □या सच में ही तुम विदूषक से भी गए-गुजरे नहीं हो?' यह सुनकर साधक को भी हंसी आ गयी। उसके मन का भार हल्का हो गया।

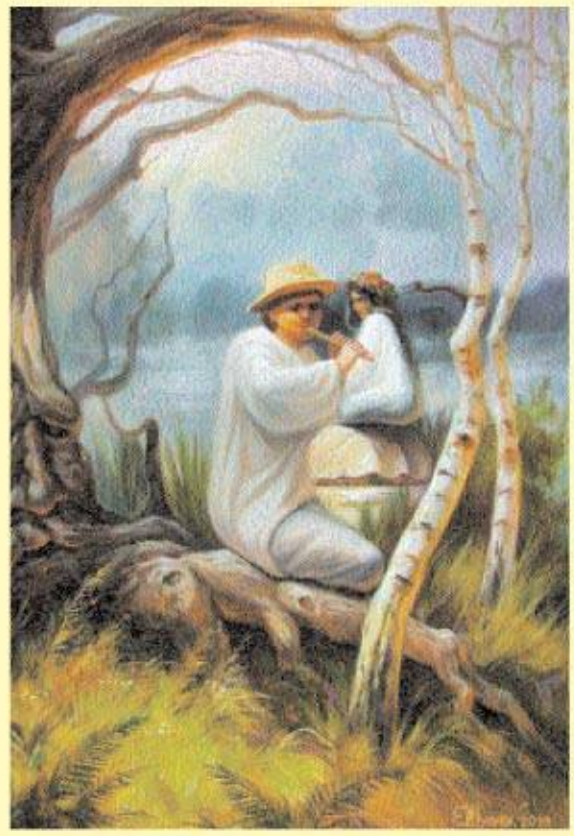

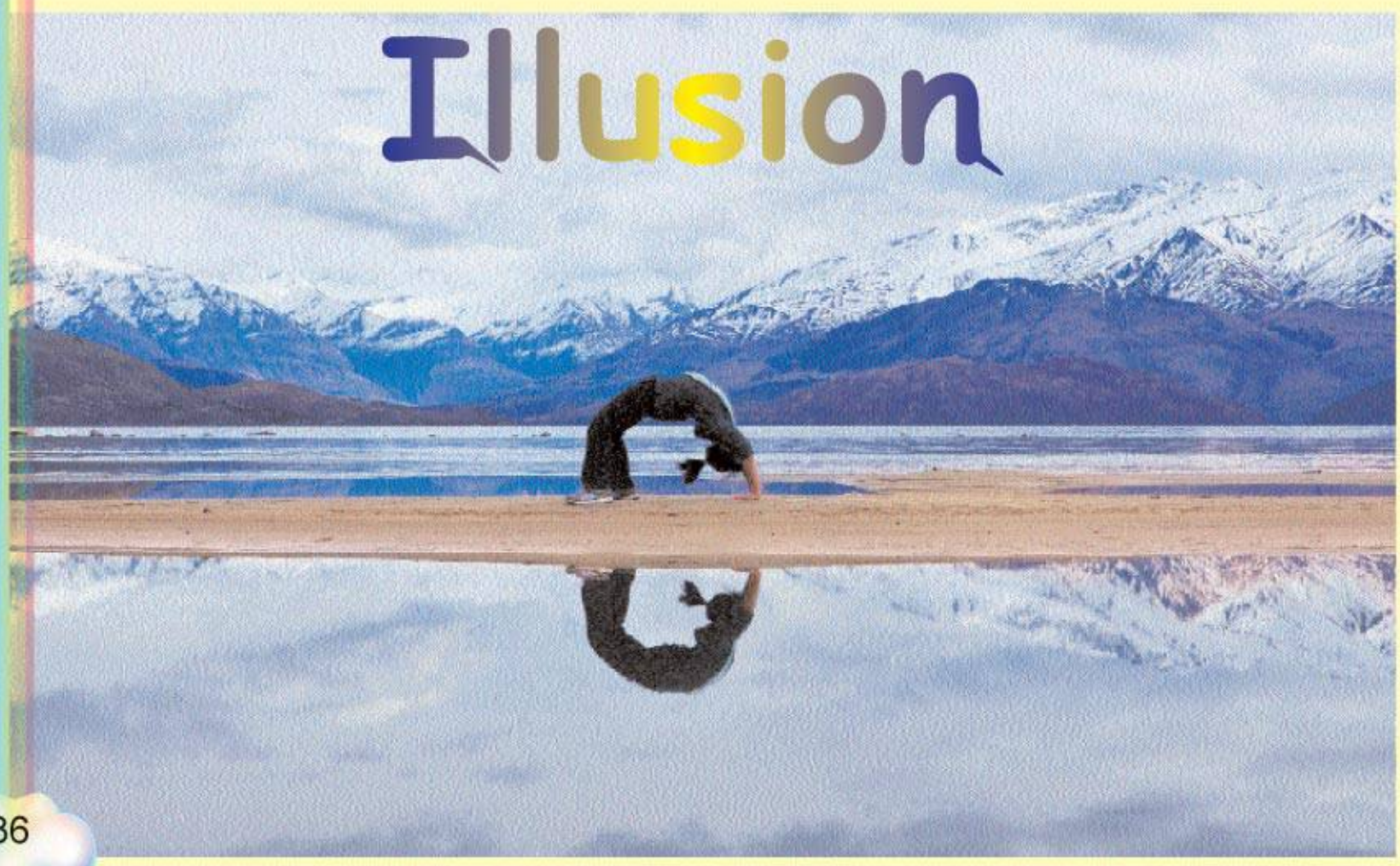
Illusion

Feel the rain on your skin.
No one else can feel it for you.
Only you can let it in.

Some people feel the rain.
Others just get wet.

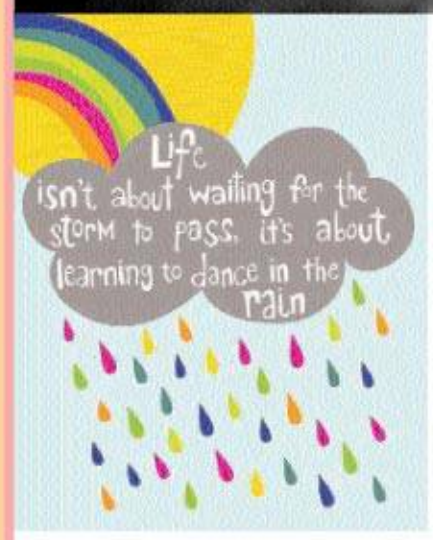
Life isn't about waiting for the storm to pass. it's about learning to dance in the rain

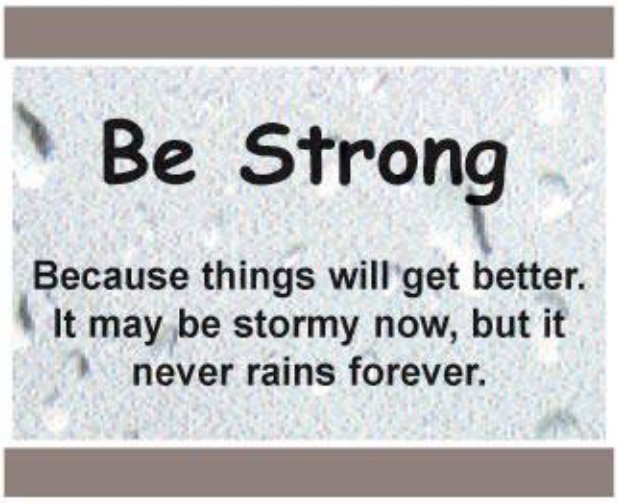
Be Strong
Because things will get better.
It may be stormy now, but it never rains forever.

ENJOY
THE
RAIN

Rain Makes
Everything
Beautiful

Rain Quotes

Let the rain wash away,
all the pain of yesterday

EVERYONE WANTS
HAPINESS, NO ONE WANTS
PAIN. BUT YOU CAN'T MAKE
A RAINBOW WITHOUT A
LITTLE RAIN.

Open skies are falling
Tears are coming down
Like a drop of rain falls to the ocean
And comes back around

Without the rain,
there would be no
RAINBOW

बच्चो, तु□हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तु□हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तु□हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वा□य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और

क. नहीं, मैं वहां कभी नहीं गया।
No, I've never been there.
नो, आइव नेवर बीन देअर।

ख. लेकिन मुझे कुछ दिनों के लिए जाना अच्छा लगेगा।
But I'd love to go someday.
बट आईवुड लव टु गो सम डे।

फ. यह यात्रा कितना समय लेती है?
How long does the journey take?
हाऊ लांग डज द जर्नी टेक?

ब. हम कितने बजे आगमन करेंगे?
What time do we arrive?
व्हाट टाइम डू वी अराइव?

भ. □या आप बीमारी में यात्रा करते हैं?
Do you get travel sick?
डू यू गेट ट्रेवल सिक?

म. अच्छी यात्रा करना।
Have a good journey.
हेव अ गुड जर्नी।

स्त्र. अपनी यात्रा का आनंद उठाना।
Enjoy your trip.
एंजॉय योअर ट्रिप।

त. मुझे लखनऊ की यात्रा करना अच्छा लगेगा।
I'd like to travel to Lucknow.
आइवुड लाइक टु ट्रेवल टु लखनऊ।

-. मैं एक यात्रा आरक्षित करना चाहता हूं।
I'd like to book a trip.
आइवुड लाइक टु बुक अ ट्रिप।

क. उड़ान की □या कीमत है?
How much are the flights?
हाऊ मच आर द □लाइट्स?

Antonyms

Vertical-ल□बवत्	Horizontal-क्षैतिज
Victory-विजय	Defeat-हार
Violent-उग्र	Gentle-नम्र
Visitor-आगंतुक	Host-मेजबान
Voluntary-स्वैच्छिक	Compulsory-अनिवार्य

Word-Power

- Warmth-जोश, उत्साह — Glance-झलक
- Legislature-विधानमंडल — Wherever-जहां कहीं भी
- Prevention-बचाव — Delicate-कोमल, रुचिकर
- Revealed-पता चला, खुलासा — Provisions-प्रावधान, नियम, रसद

English-Hindi Phrases

Day to day work- दैनन्दिन कार्य।
Deduction at source- स्रोत पर कटौती।
Debarred from service- सेवा से वर्जित।
Decided on high level- उच्च स्तर पर निर्णीत।
Decided on merits of- गुण-दोष के आधार पर निर्णीत।

Synonyms

Dull -मन्द, सुस्त, मंदा, अरुचिकर, आलसी, धुंधला, निरुत्साह, नीरस, फीका, भोथरा, मंदबुद्धि।
Boring, Tiring, Tiresome, Uninteresting, Slow, Stupid, Unimaginative, Lifeless, Dead, Insensible, Tedious, Wearisome, Listless, Expressionless, Plain, Monotonous, Humdrum, Dreary.

IDIOM

Behind The Times- Old Fashioned.
My aunt is a little behind the times.

एक व्यक्ति तेजी से होटल में घुसा और बोला, 'इससे पहले कि दंगा शुरू हो जाए मुझे एक प्लेट समोसे ला दो।'
वेटर ने समोसे ला दिए।
व्यक्ति- इससे पहले कि दंगा शुरू हो जाय, मुझे एक प्लेट कटलेट ला दो।
वेटर ने कटलेट ला दिए।
इसी तरह यह कहकर कि कहीं दंगा शुरू न हो जाय मुझे यह ला दो कहते-कहते ढेर सारी चीजें खा गया।
आखिर होटल के मालिक से रहा नहीं गया।
उसने पूछा- भाई दंगा क्यों होने वाला है?
व्यक्ति- क्योंकि मेरी जेब में पैसे नहीं हैं।

राजू-यार, तुमने जो पौधा मेरे घर के गमले में लगाया था, वह अभी तक बढ़ा नही।
अरुण- तुम्हें कैसे पता?
राजू-क्योंकि मैं उसे रोज उखाड़ कर देखता हूं।

नरेश पत्नी से बोला- अगर ऑपरेशन के समय मेरी मौत हो जाए, तब तुम उसी डॉक्टर से ही शादी कर लेना।
पत्नी- आप ऐसा क्यूं कह रहे हैं।
नरेश- डॉक्टर से बदला लेने का इससे अच्छा कोई तरीका नहीं है।

मालिक- अरे, बहादुर, तुमने मेरी रोटी पर इतना सारा घी क्यों लगा दिया?
नौकर- माफ करना साब, गलती से मैं अपनी रोटी आपको दे गया!

राजेश दुखी होकर बोला- हे प्रभु, इस जिन्दगी से मौत भली।
अचानक यमदूत आकर बोला- तुम्हारी जान लेने का समय आ गया है।
राजेश- अच्छा! अब मैं मजाक भी नहीं कर सकता!

मनोज-तुम्हारे घर में तो नौकरानी है, फिर तुम स्वयं धुलाई क्यों कर रहे हो?
विनोद- मैंने उससे शादी जो कर ली है।

एक स्त्री दुकान में घुसी, सामान देखते-देखते उसने दुकान के नौकर को परेशान कर दिया। फिर कहने लगी, मेरे खयाल में तुम अपने मालिक को बुलाओ, शायद उनमें ज्यादा अक्ल हो।
नौकर- जी हां, उनमें मुझसे ज्यादा अक्ल है, तभी तो आपको अन्दर आते देखकर वह बाहर खिसक गए।

मां- क्या पहले दिन तुम्हें स्कूल में मजा आया?
बेटा- पहला दिन! तो क्या मुझे कल फिर स्कूल जाना पड़ेगा।

अध्यापक-तुम इतनी देर से क्यों आए हो?
सतीश- सर! गिरने से लग गई थी।
अध्यापक- क्या हुआ जो गिरने से लग गई?
सतीश- सर, बिस्तर पर गिरने से आंख लग गई थी।

बूढ़ा ग्रामीण- डॉक्टर साहब, मेरी दायीं टांग में कई दिनों से दर्द रहने लगा है।
डॉक्टर- कोई खास बात नहीं, बुढ़ापे की वजह से है।
ग्रामीण- मगर डॉक्टर साहब उमर तो मेरी दोनों टांगों की एक जितनी है।

एक वृद्ध महिला दांत निकलवाने डॉक्टर के पास गई।
डॉक्टर बोला- माई जरा मुंह खोलो, और खोलो, जरा और...।
वृद्धा झुंझलाकर बोली, 'अरे मुए, क्या मुंह में बैठकर दांत निकालेगा?'

बेयरा- अरे-अरे बाबू जी, आप यह चम्मच किससे पूछकर ले रहे हैं?
दयानन्द- डॉक्टर के हुकम से।
बेयरा- क्या मतलब?
जेब से दवा की शीशी निकाल कर दिखाते हुए दयानन्द बोला- देखो, दवा की इस शीशी पर लिखा है...खाना खाने के बाद दो चम्मच ले लें।

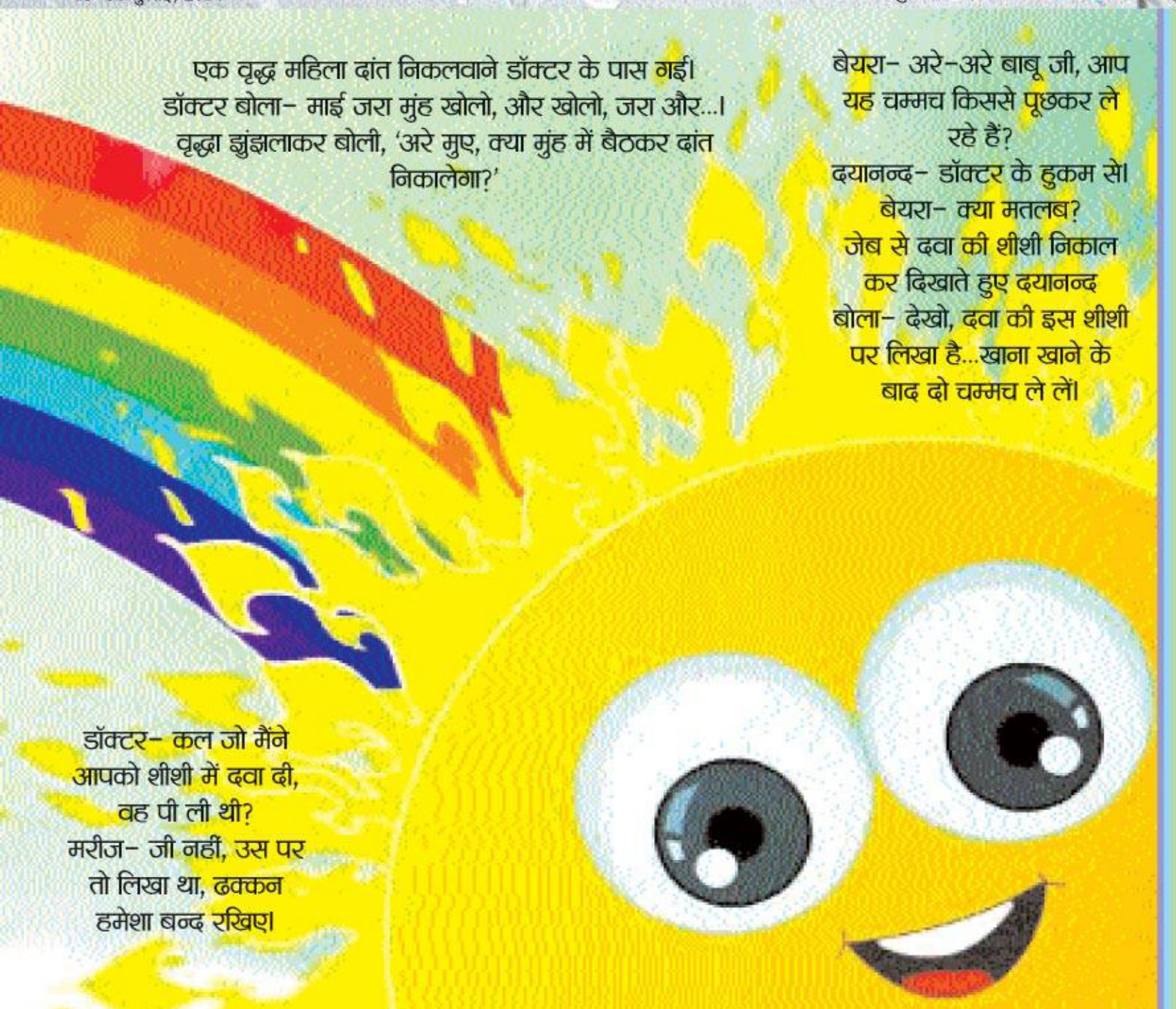

डॉक्टर- कल जो मैंने आपको शीशी में दवा दी, वह पी ली थी?
मरीज- जी नहीं, उस पर तो लिखा था, ढक्कन हमेशा बन्द रखिए।

पुलिस- तुम्हारी कार का एक्सीडेंट कैसे हुआ?
अमर- पता नहीं साब, मैं तो सो रहा था!

अजीत- माइकल इसके एक हाथ में लाल और दूसरे हाथ में हरा रंग लगा दो।
माइकल- लेकिन क्यों बॉस?
अजीत- बेवकूफ, इतना भी नहीं जानते, जब पुलिस आएगी तो उसे रंगे हाथों पकड़ लेगी।

डॉक्टर मरीज से- लगता है ऑपरेशन के वक्त मेरे दस्ताने तुम्हारे पेट में ही रह गए हैं, मुझे तुम्हारा दोबारा ऑपरेशन करना पड़ेगा।
मरीज- अगर आप इतने से काम के कारण मेरा फिर ऑपरेशन करेंगे तो रहने दीजिए, मैं आपके दस्तानों की कीमत चुका दूंगा।

विनोद- तुम्हारे दांत देखकर लगता है तुम्हारी उम्र 25 साल होगी। घने बाल देखकर लगता है कि बीस साल होगी और चंचलता देखकर लगता है कि तुम सिर्फ 16 साल की होगी।
आशा- अच्छा मेरी सही उम्र बताओ तो जानूं।
विनोद- कुल इकसठ साल।

आधी रात को एक शराबी नशे में धुत नाली में लेटा हुआ था।
सिपाही- ऐ! क्या कर रहे हो।
शराबी- एक पचास का नोट ढूंढ़ रहा हूं।
सिपाही- तुम्हें ठीक से याद है न कि तुम्हारा नोट यहीं खोया था।
शराबी- खोने की बात किसने की? मैंने तो सिर्फ ढूंढ़ने की बात कही थी।

बादलों का बनना

बादल पानी या बर्फ के हजारों नन्हे-नन्हे कणों से मिलकर बनते हैं। ये नन्हे कण इतने हल्के होते हैं कि वे हवा में आसानी से उड़ने लगते हैं। बादल के तीन प्रमुख प्रकार होते हैं—सिरस, □युमुलस और स्ट्रेटस। इन नामों को बादलों की प्रकृति और आकार के आधार पर रखा गया है। बहुत बार बादल मिलेजुले आकार-प्रकार के भी होते हैं। ऐसे बादलों को मिलेजुले नामों से जाना जाता है। इन प्रकारों के विषय में ठीक से जानने के लिए उन के दस नाम रखे गए हैं। ये सब नाम लैटिन भाषा में हैं। ऊंचाई पर उड़ने वाले सबसे सामान्य बादल सिरस कहलाते हैं। सिरस का अर्थ है, गोलाकार। इन्हें लगभग रोज आसमान में देखा जा सकता है। ये बादल हल्के और फुसफुसे होते हैं। ये बर्फ के कणों से बने होते हैं। यहां तक कि गर्मी के मौसम में दिखने वाले बादलों में भी बर्फ के कण होते हैं, □योंकि उतनी ऊंचाई पर काफी सर्दी होती है।

□युमुलस का अर्थ है, ढेर। अपने नाम के अनुरूप ये बादल रूई के ढेर की तरह दिखाई देते हैं। कभी-कभी ये गहरे रंग के होते हैं, तब इनमें से पानी या ओलों की वर्षा हो सकती है। ऐसे बादलों को □युमुलोनिंबस कहते हैं। □युमुलोनिंबस बादल एवरेस्ट पर्वत से दुगुने ऊंचे हो सकते हैं और अ□सर उनमें आधा करोड़ टन से ज्यादा पानी होता है। लैटिन भाषा में □युमुलोनिंबस का अर्थ है, पानी से भरा हुआ बादल।

बादलों में संघनन के कारण बूंदें बनती हैं। ऐसा तब होता है, जब गरम हवा ऊपर उठती है और ठंडी हो जाती

कृत्रिम बारिश

कृत्रिम वर्षा तकनीक के तीन चरण हैं। पहले में रसायनों का इस्तेमाल करके उस इलाके के ऊपर वायु के द्रव्यमान को ऊपर की तरफ भेजा जाता है। जिससे वर्षा के बादल बन सकें।

इस प्रक्रिया में कैल्शियम-□लोराइड, कैल्शियम कार्बाइड, कैल्शियम ऑ□साइड, नमक और यूरिया के यौगिक व यूरिया और अमोनियम नाइट्रेट के यौगिक का प्रयोग किया जाता है। ये यौगिक हवा से जल वाष्प को सोख लेते हैं और संघनन की प्रक्रिया शुरू कर देते हैं।

दूसरे चरण में बादलों के द्रव्यमान को नमक, यूरिया, अमोनियम नाइट्रेट, सूखी बर्फ और कैल्शियम-□लोराइड का प्रयोग करके बढ़ाया जाता है, और तीसरे चरण में सिल्वर आयोडाइड और सूखी बर्फ जैसे ठंठा करने वाले रसायनों की बादलों में ब□बारी की जाती है, जिससे बारिश होने लगे। इस तकनीक को वर्ष क-ब- में विकसित किया गया था और आज करीब ब देशों में इसका प्रयोग हो रहा है।

अमरीका में एक टन वर्षा का पानी बनाने में क.फ सेंट का खर्च आता है, जबकि ऑस्ट्रेलिया में यह मात्र दशमलव तीन सेंट है। लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि इस तकनीक में प्रयोग होने वाले रसायन पानी और मिट्टी को प्रदूषित कर सकते हैं।

बारिश कैसे आती है? यह जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि हवाएं हमेशा उच्च वायुदाब से कम वायुदाब वाले इलाके की ओर चलती हैं। गर्मी के दिनों में भारत के उ□ारी मैदान और प्रायद्वीपीय पठार भीषण गर्मी से तपते हैं और यहां नि□न वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है। इसके उलट दक्षिण में हिंद महासागर ठंडा रहता है। ऐसी भीषण गर्मी के कारण ही महासागर से नमी लेकर हवाएं भारत के दक्षिणी तट से देश में प्रवेश करती हैं।

जून माह के करीब केरल तट और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में मानसून सक्रिय हो जाता है। हमारे देश में वर्षा ऋतु के अमूमन तीन या चार महीने माने गए हैं। दक्षिण में ज्यादा दिनों तक पानी बरसता है। यानी वहां वर्षा ऋतु ज्यादा लंबी होती है। जबकि जैसे-जैसे हम दक्षिण से उ□ार की ओर जाते हैं तो वर्षा के दिन कम होते जाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि मानसून से पहले ही देश के कुछ हिस्सों में बारिश हो जाती है। ऐसा इन जगहों पर बहुत ज्यादा नि□न दबाव और स्थानीय दशाओं के कारण होता है। मानसून जब आने वाला होता है तो तेज उमस होती है और हवाओं का चलना रुक जाता है। ऐसी स्थिति में अचानक मौसम बदलता है और घनघोर काले बादल आकर छा जाते हैं और बरसते हैं। इसे मौसम विज्ञानी मानसून प्रस्फोट कहते हैं।

हमारे देश भारत में मानसून की दो शाखाएं होती हैं। एक अरब सागर से उठने वाली और दूसरी बंगाल की खाड़ी से। जब अरब सागर से उठने वाली हवाएं भारत के तटीय प्रदेशों पर पहुंचती हैं तो पश्चिमी घाट से टकराकर पश्चिमी तटीय भागों में तेज बारिश करती है। यही कारण है कि मुंबई जैसे तटीय शहरों में बहुत तेज और लगातार बारिश होती है। लेकिन इन घाटों को पार करने के बाद जब ये मानसूनी हवाएं नीचे उतरती हैं तो इनका तापमान बढ़ जाता है और ये शुष्क होने लगती हैं। इस कारण प्रायद्वीपीय पठार के आंतरिक भाग बारिश से वंचित रह जाते हैं। इसलिए इन भागों को 'रेनशेडो एरिया' भी कहा गया है। यही वजह है कि तटीय शहर

सोलोमन द्वीप समूह

दुनिया के देश

यह देश सन् क्त-फ में ब्रिटेन के संरक्षण में जा चुका था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यहां जापान एवं मित्र राष्ट्रों के मध्य कड़ा संघर्ष हुआ। वर्ष क-स्त्रभ में सोलोमन द्वीप समूह को आंतरिक स्वशासन का अधिकार और वर्ष क-स्त्रत्त में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

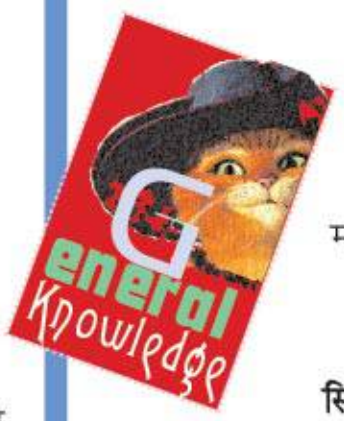

आधिकारिक नाम- सोलोमन द्वीप।

राजधानी- होनिआरा। **मुद्रा**- डॉलर।

मानक समय- जी एम टी से क्क घंटे आगे।

भाषा- अंग्रेजी (आधिकारिक), मालनेशियन, पेलिनेशियाई। **प्रमुख धर्म**- ईसाई।

कुल जनसं□या- भ,फत,फछ

क्षेत्रफल- ख्त,ब्भ वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- पापुआ न्यू गिनी के पूर्व में दक्षिण प्रशांत महासागर में स्थित द्वीप है।

जलवायु- विषुवतीय प्रकार की है।

मानचित्रानुसार- यह छोटे-बड़े द्वीपों का समूह है। यहां कई बड़े द्वीपों पर वनाच्छादित पर्वत शृंखलाएं हैं।

सर्वोच्च शिखर- माउंट मकाराको□बुरु-ख्ब्ब्स्त्र मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- होनिआरा। **निर्यात**- मछली, लकड़ी, ताड़ का तेल, नारियल। **आयात**- भोज्य पदार्थ, तैयार माल, ईंधन, रसायन। **प्रमुख उद्योग**- लकड़ी, फर्नीचर, नाव, मृदु पेय निर्माण, मत्स्य पालन। **प्रमुख फसलें**- नारियल, टारो, जमीकंद, शकरकंद, केला। **शासन प्रणाली**- संवैधानिक राजतंत्र। **संसद**- नेशनल पार्लियामेंट। **राष्ट्रीय ध्वज**- हरे, नीले व पीले रंग की पृष्ठभूमि पर पांच सफेद सितारे अंकित हैं।

स्वतंत्रता दिवस- स्त्र जुलाई, क-स्त्रत्त

प्रमुख हवाई अड्डा- होनिआरा स्थित हैन्डर्सन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा। **प्रमुख बंदरगाह**- होनिआरा, येन्दिना, नोरो।

इंटरनेट कोड- .sb

- दिमाग का सतही क्षेत्रफल लगभग 1,500 से 3,000 वर्ग सेंटीमीटर तक होता है।
- दिमाग शरीर का सबसे ज्यादा चर्बी वाला अंग है।
- दिमाग में 1,00,000 मील लम्बी रक्त वाहिकाएं होती हैं।
- दिमाग को 4 से 6 मिनट तक ऑक्सीजन न मिलने पर भी यह रह सकता है। पर 5 से 10 मिनट तक न मिलने पर ब्रेन डेमेज होना पक्का है।
- मनुष्य के दिमाग का वजन लगभग 1500 ग्राम तक होता है।
- वैज्ञानिक मानते हैं कि ब्रह्माण्ड में सबसे जटिल और रहस्यमयी चीज मनुष्य का दिमाग है।
- मानव दिमाग के अंदर एक सैकंड में 1 लाख रासायनिक प्रतिक्रियाएं होती हैं।

स्ट्रॉबेरी भी एक किस्म के केले ही हैं।

स्ट्रॉबेरी और काजू इकलौते ऐसे फल हैं, जिनके बीज फल के बाहर होते हैं, जबकि अन्य फलों के अंदर होते हैं।

अंग्रेजों के आने से पहले भारत पूरे विश्व में सबसे अमीर देश था।

दुनिया में सबसे ज्यादा विश्वविद्यालय भारत में हैं।

एरिजोना में ऊंट का शिकार करना अवैधानिक है।

हमारे शरीर में सबसे ताकतवर मांसपेशी हमारी जीभ है।

तथ्य निराले

मटर के दाने बारूद बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

अमरीका में हर साल औसतन 800 चक्रवात आते हैं।

केले के पेड़ लगभग 20 फीट तक बढ़ जाते हैं।

एक पेड़ सालाना 2000 लीटर पानी धरती में से चूस लेता है।

चीन के लगभग 20 प्रतिशत पेड़ दवाई बनाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

टमाटर सब्जी नहीं, एक फल है।

सेब पानी में तैरने लगते हैं, क्योंकि उनमें 25 प्रतिशत हवा होती है।

एक सेब का पेड़ सालाना 400 सेबों का उत्पादन करता है।

हिमालय पर्वत हर साल 1 इंच की ऊंचाई तक बढ़ जाता है।

यदि आप अंगूरों को माइक्रोवेव में रखते हैं, तो यह फट जाएंगे।

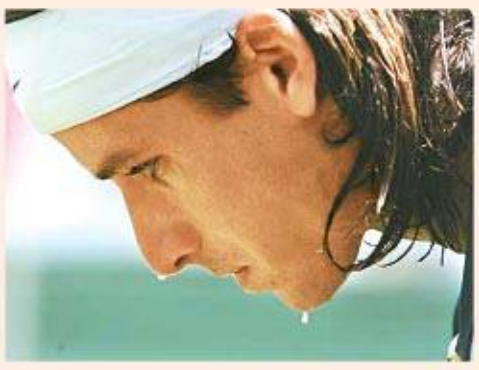

महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों को चालीस प्रतिशत अधिक पसीना आता है।

उल्लू के दांत नहीं होते हैं।

मादा उल्लू नर उल्लू से आकार और भार में बड़ी होती है।

दुनिया की सबसे बड़ी सोने की खदान अलास्का में है।

बड़े कंगारू तीस फीट लम्बी छलांग लगा सकते हैं।

संसार के 90 प्रतिशत ज्वालामुखी समुद्रो में हैं।

हेलमेट पहनने के बाद भी दिमाग को चोट लगने की संभावना 80 प्रतिशत तक होती है।

न्यूयॉर्क शहर का निक नेम बिग एप्पल है।

अमरीकी हर साल 35 हजार टन पास्ता खा जाते हैं।

ड्राई आइस

ठोस रूप में जमी हुई कार्बन-डाई-ऑक्साइड नामक गैस को ही 'ड्राई-आइस' के नाम से जाना जाता है। निम्न तापक्रम पर उपयुक्त दाब से यह गैस द्रव-रूप में परिवर्तित हो जाती है। जब दाब हटाया जाता है तो इस द्रव का कुछ भाग वाष्पीकृत होने लगता है। जिसके लिए बाकी बचे द्रव के ताप का उपयोग होता है। इस तरह ताप का यह उपयोग तब तक होता है, जब तक कि बचा हुआ द्रव ठोस में परिवर्तित नहीं हो जाता।

इसे ड्राई-आइस इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह ठोस अवस्था से बिना द्रव की स्थिति में आए सीधे गैस का रूप धारण कर लेती है। जबकि पानी से बनी

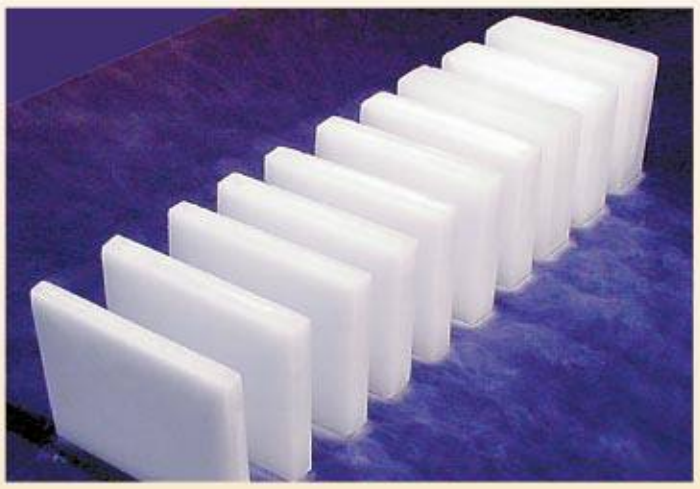

साधारण बर्फ द्रव में ही बदलती है। इस साधारण बर्फ की तुलना में चूंकि ड्राई आइस बेहद ठंडी होती है, इसलिए इसे नंगे हाथों से छूना काफी हानिकारक सिद्ध हो सकता है। इसके उपयोग का कोई उदाहरण देना हो तो सबसे अच्छा रहेगा आपको उसे ठेले वाले के बारे में बताना, जिसके आइसक्रीम से भरे बक्से की दोहरी दीवारों के बीच यही ड्राई आइस भरी रहती है, ठंडी-ठंडी आइसक्रीम को पिघलने से बचाए रखने के लिए। वैसे साधारण वातावरण में नष्ट हो जाने वाले ब्लड प्लाज्मा और कुछ विशेष तरह के एंटीबायोटिक्स के सुरक्षित तौर पर स्थानांतरण के लिए भी ड्राई आइस का ही उपयोग किया जाता है।

पौधा ढूंढे अपना रास्ता

सामग्री- जूते वाला खाली डिब्बा, पार्टीशन के लिए गत्ते के कुछ टुकड़े, आंख वाला आलू, सेलोटेप।

शुरू करो- डिब्बे की चौड़ाई की तरफ वाले एक भाग पर बड़ा-सा छेद कर लो। साथ ही बोर्ड या गत्ते के टुकड़ों को सही आकार देते हुए इन्हें सेलोटेप की सहायता से डिब्बे के बीच बराबर दूरियों पर इस तरह लगा दो जैसा कि साथ के चित्र में दिखाया गया है।

अब उठाओ आलू। परन्तु पहले यहां यह बता देना बहुत जरूरी है कि आंख वाला आलू होता क्या है? आलू की सतह पर तुमने छोटे-छोटे गड्ढे जरूर देखे होंगे। इन्हें

आलू की आंखें कहते हैं। अनुकूल मौसम में इन्हीं में से अंकुर फूटते हैं, जिन्हें बोकर नये आलू की फसल तैयार की जाती है।

ऐसे ही एक आलू (अंकुरित) को डिब्बे में चौड़ाई की तरफ वाले भाग के पास रखो। पर, इस बार उस ओर, जिधर छेद नहीं किया हुआ है और इसके बाद डिब्बे पर ढक्कन कसकर इसे कहीं ऐसी जगह रख दो, जहां इसके छेद के माध्यम से धूप कुछ देर डिब्बे के अंदर तक पहुंच जाये। कुछ दिनों के बाद जब तुम डिब्बे का ढक्कन हटा कर देखोगे तो तुम्हें आश्चर्य होगा कि आलू का पौधा किस तरह मुड़ता करता हुआ छेद की ओर बढ़ आया है।

कैसे होता है यह- प्रकृति का गुण है कि हर पौधा प्रकाश की ओर बढ़ता है। इसी आधार पर यहां भी मार्ग की रुकावटों को पार करते हुए मुड़ते-मुड़ाते यह पौधा प्रकाश की ओर बढ़ते-बढ़ते छेद से बाहर तक आ जाता है।

-आइवर

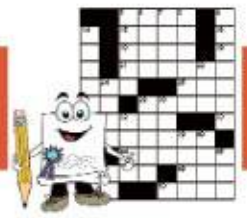

Crossword Puzzles

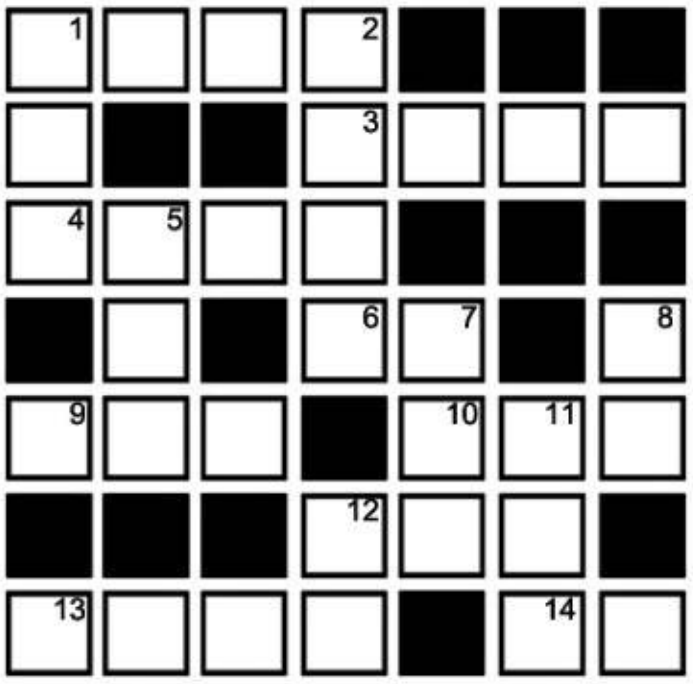

बाएं से दाएं

क. अनुमति, आज्ञा (ब)।

फ. संक्षिप्त जीवन वृ□ा, रेखाओं से बना चित्र (ब)।

ब. पथिक, यात्री(ब)।

त. बड़ी रोटी को यह भी कहते हैं (ख)।

-. लाश, अर्थी (ब)।

क्क. सत्य, वास्तविकता (फ)।

क्ख. प्रियतम, प्रेम-पात्र (फ)।

क्फ. विद्रोह (ब)।

क्ब. आवाज, ध्वनि,

ऊपर से नीचे

क. संकेत (फ)।

ख. कड़ी निगाह से देखना (ब)।

भ. खिसकना, सरकना, जगह छोड़ देना (फ)।

ख्र. शरीर का एक अंग, चक्षु (फ)।

त. मतलब, अभिप्राय (ख)।

क्क. पकड़ना (फ)।

क्ख. सत्य, सच्चाई, राम नाम...है (ख)।

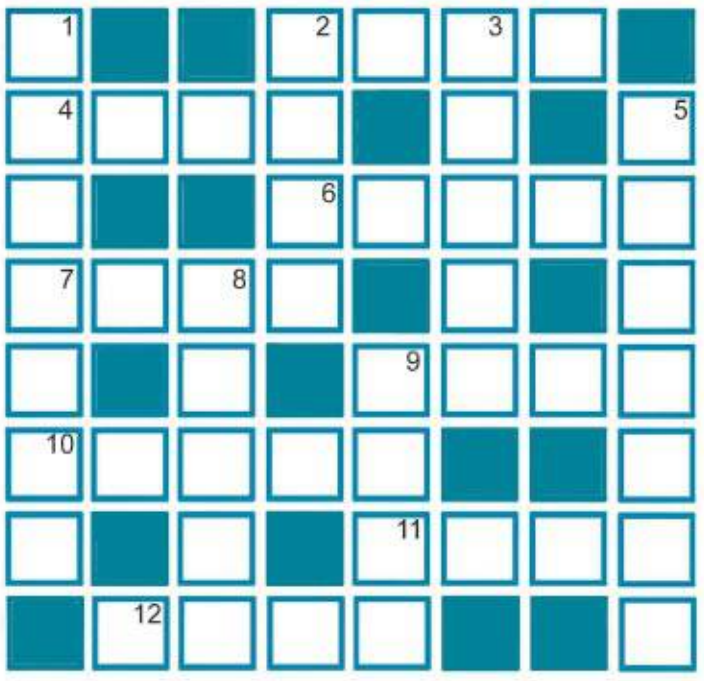

ACROSS

2. A Japanese from of heavy weight wrestling (4).

4. A men-eater giant,A cruel or terrifying person (4).

6. Forming an essential foundation or starting point, Fundamental (5).

7. Symbol of Judaism(4).

9. A Japanese horror film...the killer (4).

10. Happening in a short time or at a great rate (5).

11. An artistic work, especially one on a large scale (4).

12. The process of distributing the cards to players in a card game (4).

DOWN

1. Peace and harmony between people (7).

2. Abbreviation for Securities and Exchange Board of India (4).

3. Any pleasing sound or sound (5).

5. The total or partial obscuration of the light of the Sun or Moon (7).

8. Wide, Copious, Large size (5).

9. An image of a deity (4).

Answer

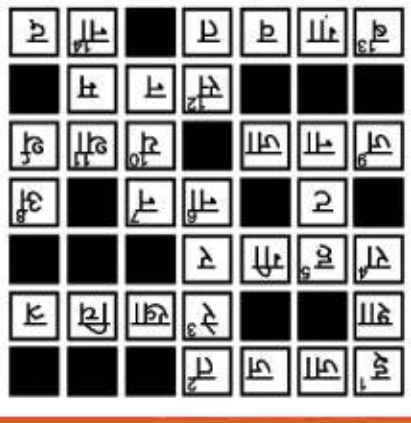

आकाश में आए बादल

उमड़ घुमड़ कर आए बादल
आसमान में छाए बादल।
वर्षाकाल में आते बादल
बूंदों को बरसाते बादल।

बिजली को चमकाते बादल
खेतों को लहलहाते बादल।
सागर से बनते हैं बादल
सागर में मिल जाते बादल।

–मनीषा रामावत, बालोतरा (राज.)

दीपिका शेखावत
जयपुर (राज.)

भूमिका मिश्रा
जोधपुर (राज.)

अभिराज राठौर
उन्नाव (उ.प्र.)

गुरु की महिमा

गुरु आपकी महिमा को मैं बार-बार गाऊं
मन करता है आप से अनंत ज्ञान पाऊं।
आपके श्रीचरणों में हम पाते हैं आशीष
आपकी छवि के आगे झुकता हमारा शीश।
हो प्रभु अवतार आप, परम सम्मानीय
आप हो विराट व्यक्तित्व और आदरणीय।
आपके मुख मंडल पर हमेशा खुशी रहती
ऐसे गुरु को पाकर मैं, फूली नहीं समाती।
आपके वचन हैं, हमारे जीवन का आधार
आपसे ही हमें मिलता ज्ञान भरपूर।
करती हूं भगवान से विनती बार-बार
हमेशा करती रहूं गुरु का स्मरण हर बार।

लिजा चन्देल,
जयपुर (राज.)

बालमंच

लिटिल स्टार

बाल कलाकार अभिलीन पाण्डे छोटे पर्दे का बड़ा सितारा बन तेजी से उभरा है। स्टार वन के लोकप्रिय धारावाहिक 'शकुंतला' में उसकी भूमिका इतनी शानदार रही कि सीरियल निर्माता ने उसके रोल को बढ़ाते रहने का निर्णय लिया। वह कहता है, 'शकुंतला टीवी शृंखला धार्मिक प्रेम कथा पर आधारित होने के बावजूद मेरा अभिनय मुंह से बोला। सैट पर की गई मेरी मेहनत रंग लायी और देखते ही देखते लिटिल स्टार बन गया।'

अभिलीन पाण्डे रंगमंच की दुनिया से छोटी-सी उम्र से जुड़ गया था। गर्मी की छुट्टियों में आयोजित रंग शालाओं, कार्य शालाओं, प्रशिक्षण केन्द्रों में जाने लगा। उसकी मां ने उसे इस दिशा में अंगुली पकड़कर चलना सिखाया। वह कहता है, 'मैंने अपना फोटो-सेशन करवाया और मॉडलिंग के लिए प्रयास किया। डायरेक्टर अय्यूब खान ने मार्ग प्रशस्त किया और समझाया कि होमवर्क करना कभी मत छोड़ना। बॉलीवुड के चर्चित लोगों के पते भी उन्होंने मुझे दिये और मेरी गाड़ी चल पड़ी।' वह अब तक पचास से अधिक नामवर प्रोडक्ट्स के लिए विज्ञापन फिल्मों में मॉडलिंग कर खूब नाम कमा रहा है।

अभिलीन पाण्डे

टीवी सीरियल में अभिलीन पाण्डे को सबसे पहले सहारा वन चैनल ने कॉमेडी शो 'रुबी डूबी हब डब' में अवसर दिया। उसमें वह विष्णु की भूमिका में खूब पसंद किया गया। वह बताता है, 'बड़े चैनल अपने सीरियलों की पब्लिसिटी भव्यता के साथ करते हैं। 'रुबी डूबी हब डब' के आकर्षक होर्डिंग्स पूरे मुम्बई में लगाये गये और उसमें मेरे चेहरे को खासा महत्त्व दिया। इस तरह माया नगरी मुम्बई में मेरा चेहरा जाना-पहचाना हो गया। इससे मुझे दूसरे सीरियलों के प्रस्ताव आने लगे और मैं व्यस्त हो गया।' सीरियल 'बनूं मैं तेरी दुल्हन' में भी वह प्रखर होकर उभरा। धारावाहिक 'कहीं किसी रोज' में भी उसका अभिनय इक्कीस ही रहा।

पढ़ाई में अभिलीन बहुत अच्छा कर रहा है। वह अपने ग्रेड में सुधार करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा है। शूटिंग को पढ़ाई के समय जरा भी महत्त्व नहीं देता। अवकाश के दिन शूटिंग का काम निपटता है। उसे बाल पत्रिकाएं पढ़ने का बहुत शौक है।

–राजू कादरी रियाज

शब्द युग्म

कदन- युद्ध, पाप, वध

क्रंदन- चीख

कान्ति- चमक

□लान्ति- थकावट

कृतज्ञ- उपकार मानने वाला

कृतघ्न- उपकार को न मानने वाला

करकट- गंदगी

कर्कट- केकड़ा (जन्तु)

पायस- खीर

पायसा- पड़ोस

पर्यायवाची शब्द

युद्ध- रण, संग्राम, समर

लहर- तरंग, ऊर्मि, वीची

राम- रघुपति, राघव, रघुवर, रमापति

रावण- दशकन्ध, दशानन, दशशीश, लंकेश

राधा- वृषभानुजा, ब्रजरानी, कृष्णप्रिया, राधिका

गोली अंदर दम बाहर।

Pill in and breath out.

गेरुए वस्त्रों से साधु नहीं बनता।

Cowl does not make a monk.

गुड़ खाना गुलगुले से परहेज।

To swallow a camel and to strain at gnat.

गुड़ न दे गुड़ की जैसी बात कह दें।

Good words costs nothing but are worth much.

जल में रहकर मगर से बैर ठीक नहीं।

You cannot live in Rome and fight with the Pope.

Close handed- कंजूस

Clear from debt- ऋणमु□त

To clear out- खाली करना,स्पष्ट करना

To close up- बिजली की धारा बंद करना

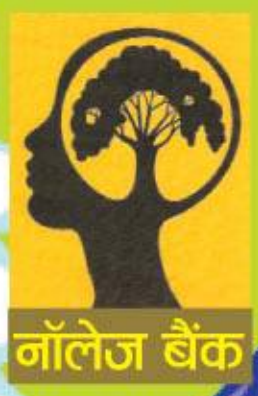

अंतर है

Mail- डाक

Male- नर

Main- मु□य

Mane- अयाल

Marital- वैवाहिक

Martial- युद्ध संबंधी

Massage- मालिश

Message- संदेश

एक के तीन

Hand-हैंड	-हाथ	-पाणि
Pray-प्रे	-प्रार्थना करना	-स्तवनम्, प्रार्थना
Call-कॉल	-बुलाना	- आह्वानम्, आमंत्रम्
Invite-इन्वाइट	-निमंत्रित करना	- निमंत्रणम्
Request-रि□वेस्ट	-अर्ज करना	- निवेदनम्-अनुरोधः

लोकोक्तियां

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक- सीमित सामर्थ्य होना।

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त- जिसका काम हो वह तो निष्क्रिय हो और उसके मददगार सक्रिय हों।

मुख में राम बगल में छुरी- अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन, किन्तु धोखा

उर्दू/ हिन्दी

खसीस- कृपण, अधम, नीच

खल्जान- झगड़ा, बखेड़ा, दुविधा

खल्फ- कपूत, बुरा लड़का, कुपुत्र

खशन- पलास, टाट, मोटा कपड़ा

खाइफ- भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ

One Word

Study of earth- **Geology.**

A list of books- **Catalogue.**

Worship of idols- **Idolatry.**

Science of origin of universe- **Cosmology.**

- जिसको व्यवहार में न लाया गया हो- **अव्यवहृत।**
- जो स्त्री सूर्य भी नहीं देख पाती- **असूर्यंपश्या।**
- न हो सकनेवाला (कार्य आदि)- **अश□य।**
- जो शोक करने योग्य नहीं हो- **अशो□य।**

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

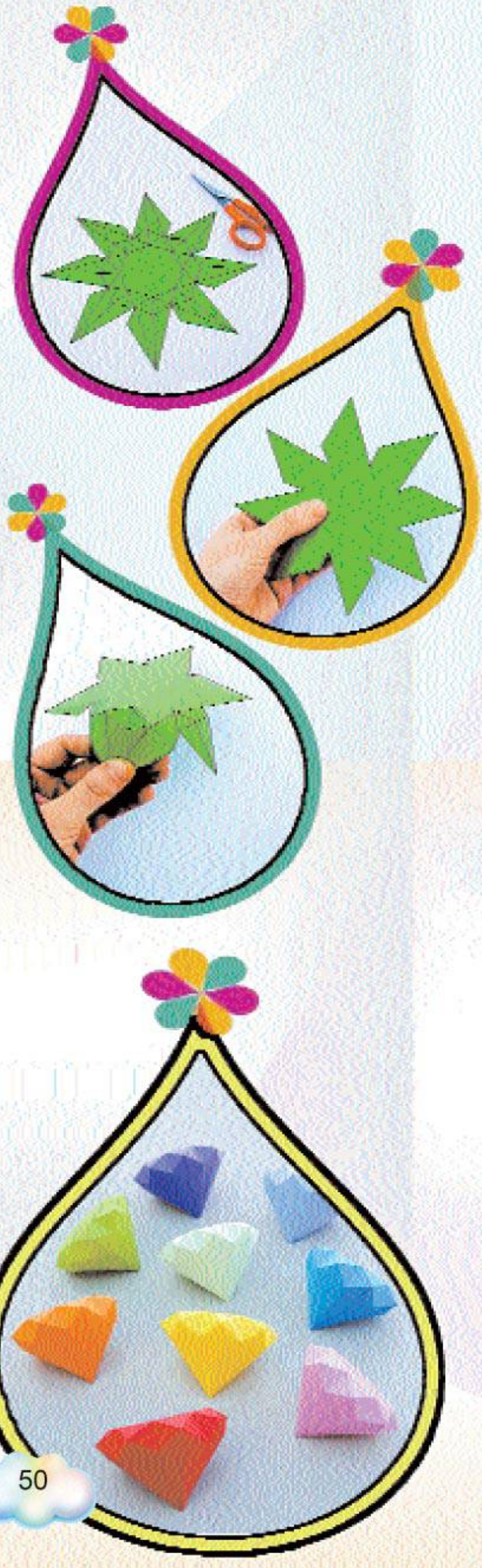

art junction

पेपर हीरे

सामग्री : क्राफ्ट पेपर, कैंची, पेंसिल, फेविकोल।

विधि : ड्रॉइंगशीट को दिखाए गए चित्रानुसार काटें। पेंसिल से मार्क करके शीट को मोड़ें। चारों तरफ से एक समान मुड़े होने चाहिए। फेविकोल लगाकर इनके जोड़ अच्छी तरह से चिपका दें। रंग-बिरंगे हीरों से आप कुछ भी बना सकते हैं। इन्हें एक धागे में चिपकाकर ज्वैलरी बना सकते हैं या कैनवास पर चिपकाकर पेंटिंग भी बना सकते हैं।

सूतली लैम्प

सामग्री : सूतली, फेविकोल, पतली रबर की बॉल, कैंची।

विधि : बॉल में हवा भरकर चारों ओर फेविकोल लगा दें। उस पर दिखाए गए चित्रानुसार धीरे-धीरे सूतली को लपेटते जाएं और एक जाल बनाकर बॉल को ढंक दें। ऊपर से एक गोलाकार जगह छोड़ दें।

अब इसे सूखने दें। अच्छी तरह सूखने के पश्चात आगे से बॉल को कैंची से काटकर बाहर निकाल दें। इसमें बल्ब तथा डोरी लगाकर अपने रूम में लटकाइए।

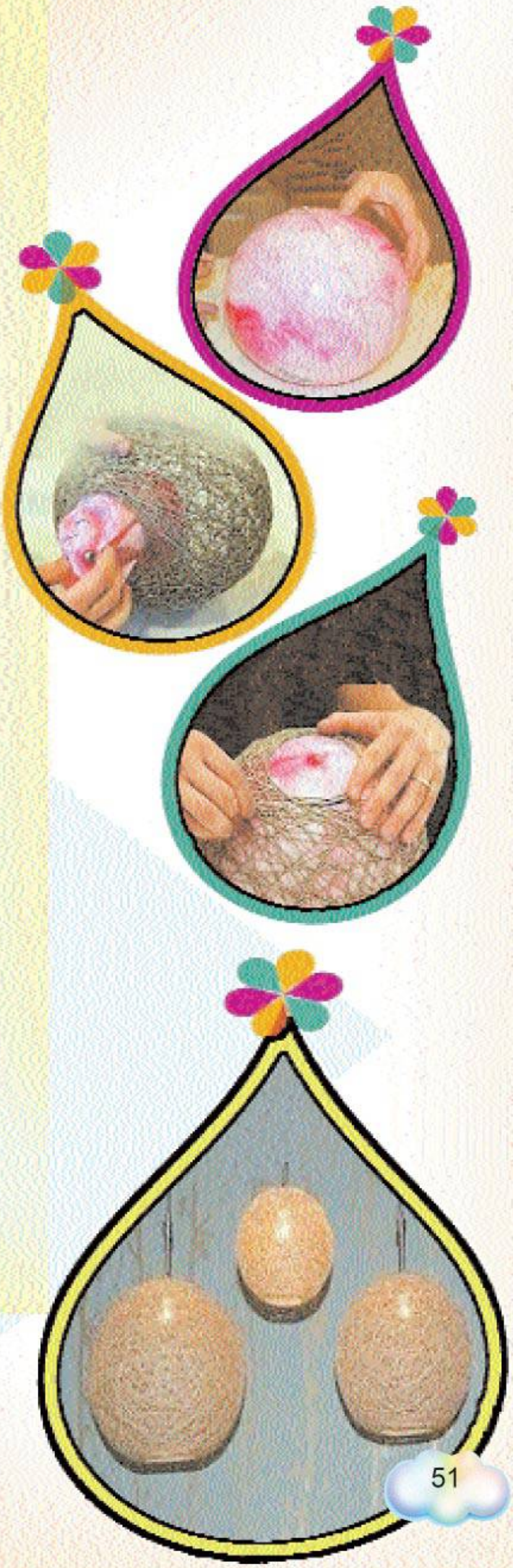

अंतर बताओ

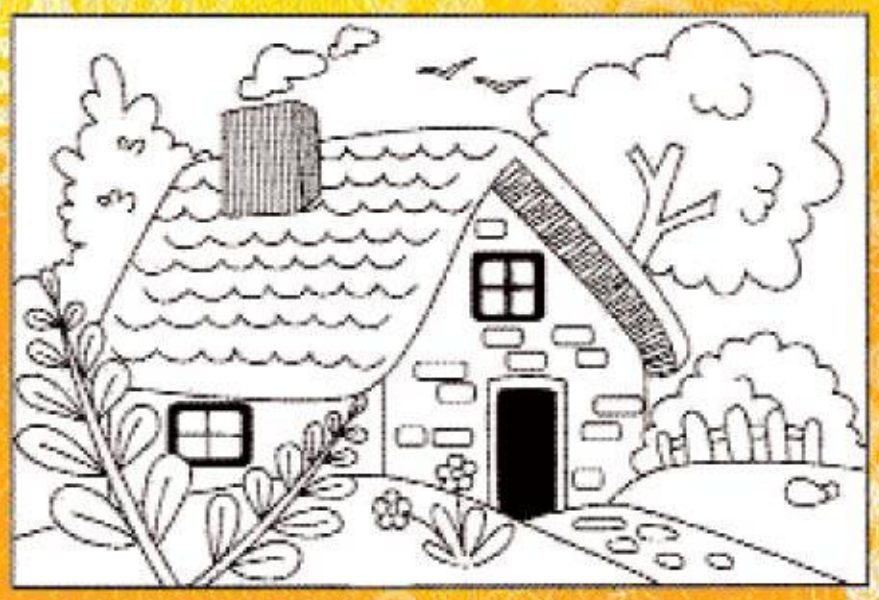

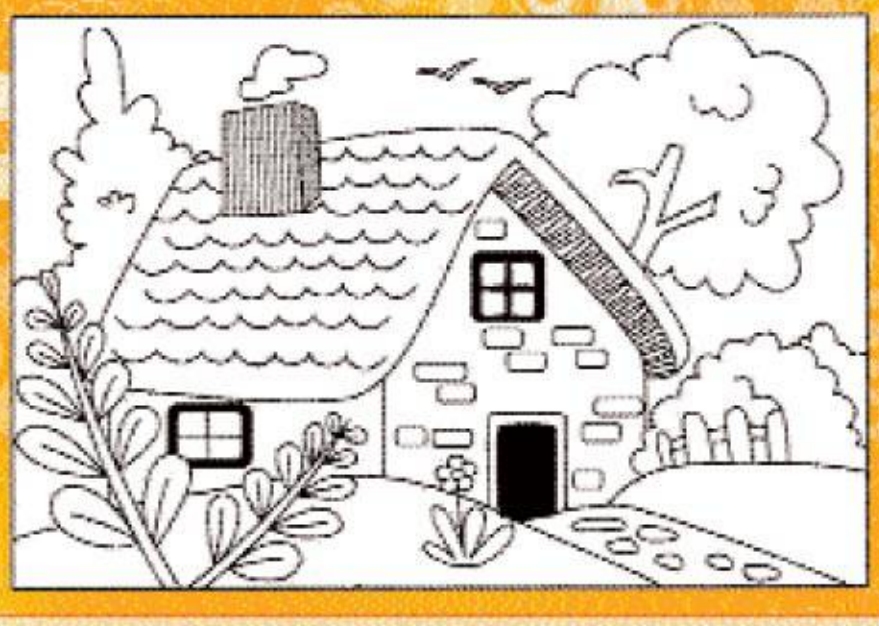

उत्तर

1. दिमाग़ी से दुआं कम निकल रहा है।
2. पीछे लगे पेड़ का तना नीचे की ओर झुका है।
3. झोंपड़ी के पीछे वाला पेड़ लंबा है।
4. सामने लगी झाड़ी में परियां कम हैं।
5. पगडंडी में एक डंडा कम है।
6. रास्ते में पड़े पत्थर कम हैं।
7. आगे लगा एक पुल टूट गया है।
8. धारा के बीच में एक पत्थर पड़ा है।
9. झोंपड़ी का दरवाजा छोटा है।
10. पीछे का एक पेड़ गायब है।

उत्तर

1. सूरज थोड़ा तिरछा है।
2. आसमान में दो पक्षी उड़ रहे हैं।
3. पेड़ की कोटर बड़ी है।
4. फायर ब्रिगेड में एक बटन कम है।
5. लड़के की बैल्ट में बदकल नहीं है।
6. कुत्ते की पूंछ छोटी है।
7. पानी की मोटर में ऊपर की घुण्डी नहीं है।
8. लड़के की कैप का लोगो उल्टा है।
9. सीढ़ी का एक डंडा गायब है।

बिन्दु से बिन्दु

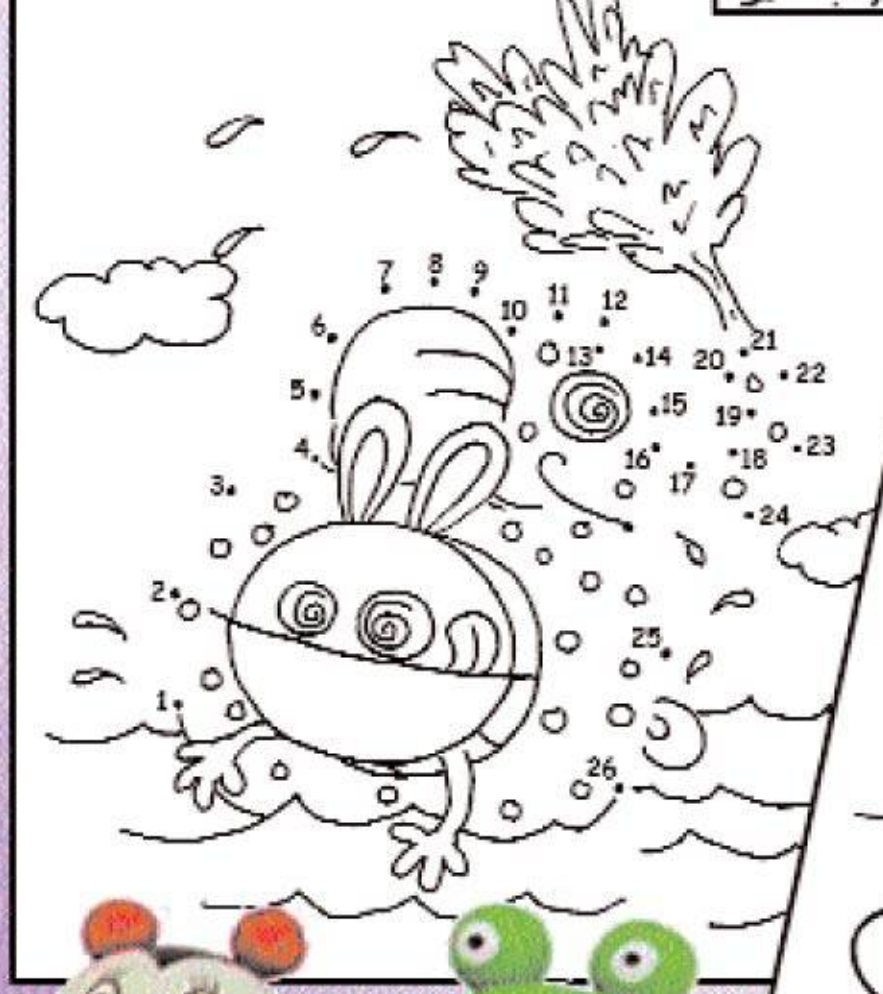

संजय कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-पूसा रोड (बिहार)
रुचि-पढ़ना, टीवी देखना।

मो. जिगर नवाज
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-पूर्णिया (बिहार)
रुचि-पढ़ना, सेवा।

आदित्य आनंद
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-खगड़िया (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

दीपक कुमार
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-समस्तीपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, सिंगिंग।

ममांश सोनी
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-बारां (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

आदित्य जैन
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-अचनेरा (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

तनजिया मैहनाज
उम्र-क वर्ष
स्थान-दरभंगा (बिहार)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

सार्थक चौधरी
उम्र- म वर्ष
स्थान-इंदौर (म.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

मो. फैजान रजा
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान- मथुरापुर
रुचि- पढ़ना, खेलना।

राहुल कुमावत
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-नावां (राज.)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

प्रेम कुमावत
उम्र- क वर्ष
स्थान-रानोली (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

मनन फर□या
उम्र- ख्र वर्ष
स्थान-देवास (म.प्र.)
रुचि-स्केटिंग, पढ़ना।

गोपाल जांगिड़
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

नि□बाराम जांगिड़
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-बोला, बाड़मेर
रुचि-पढ़ना, लिखना।

मो. शादाब अनवर
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-बायसी
रुचि-पढ़ना, सेवा करना।

करण कुमार
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-समस्तीपुर (बिहार)
रुचि-क□प्यूटिंग।

सिकन्दर यादव
उम्र- क्क वर्ष
स्थान- जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

रुचिता सिसोदिया
उम्र- - वर्ष
स्थान-झालावाड़ (राज.)
रुचि-पेंटिंग, पढ़ना।

चूनाराम जांगिड़
उम्र- स्त्र वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

आर्यन गुप्ता
उम्र- भ वर्ष
स्थान-गोरखपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

प्रियेश गुप्ता
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-गोरखपुर (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, साइकलिंग।

मो. अबुल फैयाज
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान- बायसी
रुचि-पढ़ना, क□प्यूटिंग।

सकलैन अहमद
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-बायसी, पूर्णिया
रुचि-पढ़ना, क□प्यूटिंग।

प्रकाश जांगिड़
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

ऋषभ गुप्ता
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-सादात (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

अभिषेक शर्मा
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-किशोरी, अलवर
रुचि-पढ़ना,सायकलिंग।

हितेश कालमा
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-केलवा, साचौर
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

गौरव चौधरी
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

वेदांश श्रीवास्तव
उम्र- - वर्ष
स्थान-सिंहपुर (म.प्र.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

चित्रांश श्रीवास्तव
उम्र- म वर्ष
स्थान-सिंहपुर (म.प्र.)
रुचि-खेलना, टीवी।

विकास मौर्य
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-फैजाबाद
रुचि-पढ़ना, खेलना।

मुकेश जांगिड़
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

बंदर नहीं हैं चिंपांजी

चिंपांजी विषुवतीय अफ्रीका में पाए जाने वाले बंदर प्रजाति के जीव होते हैं। चिंपांजी के बारे में सबसे बड़ी गलत धारणा यह है कि वे बंदर होते हैं। सच्चाई यह नहीं है। बंदरों की पूंछ होती है, जबकि चिंपांजी की नहीं होती।

चिंपांजी ऐसे स्तनधारी होते हैं जो काफी हद तक मनुष्यों की तरह होते हैं। उनके डीएनए का करीब -त्त फीसदी हिस्सा और उनके गुण मनुष्यों से मिलते-जुलते हैं। उनकी सबसे खास बात यह है कि वे मनुष्यों की ही तरह सामाजिक प्राणी होते हैं, और जीवन जीने और फलने-फूलने के लिए अपने समुदाय पर निर्भर करते हैं।

यह सब प्रकार के बंदरों में सबसे बुद्धिमान होता है, जो उपकरणों और मुश्किल चीजों को सीखने योग्य होता है। जंगली चिंपांजी लकड़ियों और घास के □लेड से अपने घोंसले से दीमक निकालते हैं। चिंपांजी को चाकू और छुरे से खाना खाना और साइकिल चलाना सिखाया जा सकता है। कुछ चिंपांजी को प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल करके वा□य बनाना या फिर क□प्यूटर की-बोर्ड पर रेखागणितीय चिह्नों को दबाना सिखाया जा सकता है।

संचार

मनुष्यों की तरह वे भी संचार करने के लिए अपने शरीर का इस्तेमाल करते हैं। वे एक-दूसरे को गुदगुदी और गोद में लेने के लिए चुंबन देते हैं, छूते हैं, और पीठ की तरफ थपथपाते हैं। यहां तक कि उनके पास हंसने की क्षमता होती है। चिंपांजी अपने शरीर के भावों, चेहरे की भंगिमाओं और हाथ की मुद्राओं के जरिये संचार करते हैं। वे एक-दूसरे को आलिंगन करके या फिर दूसरे के शरीर के अंगों को छूकर अभिवादन कर सकते हैं। उनके चेहरे के भावों पर उ□ाजना, डर और इच्छाओं जैसी कई भावनाएं होती हैं। एक चिंपांजी खासतौर पर एक नर कभी-कभी चिल्लाएगा और दूसरे चिंपांजी को धमकाने के लिए तेजी से दौड़ता है, इस शोर भरे कारनामे को 'डिस्प्ले' कहते हैं। चिंपांजी भौंकने, गुरगुराने और चिल्लाने के जरिये संचार करती है। जब उन्हें बड़ी मात्रा में भोजन मिलता है तो वे पेड़ों से कूदते हैं, तेज आवाज में चिल्लाते हैं।

भोजन

पौधे, फल, कीड़े, पि□ायां, बादाम और कभी-कभी मांस।

चाल

वे नकल-वाकर्स होते हैं। इसका मतलब है कि वे चारों पैरों पर चलते हैं, लेकिन सीधे होकर भी चल सकते हैं।

परिवार

चिंपांजी आमतौर पर ऐसे समुदायों में रहते हैं जो छह जानवरों के पारिवारिक समूहों से मिलकर बना होता है। एक समय में करीब ৮ चिंपांजी एक समुदाय में रह सकते हैं। इन समुदायों का संचालन वयस्क नरों द्वारा किया जाता है। मादा चिंपांजी विभिन्न प्रकार के नरों के साथ प्रजनन करती हैं, जिसकी वजह से पैदा हुए चिंपांजी के पिता का पता लगाना मुश्किल होता है। चूंकि उनका पिता कोई भी हो सकता है, इसलिए नर चिंपांजी प्रत्येक नवजात चिंपांजी को अपना ही मानते हैं।

उनका सबसे बड़ा दुश्मन

मनुष्य! यही कारण है जिसकी चिंपांजी प्रजाति खतरे में है। शिकार और बीमारियों के कारण उनका

ग्रूमिंग

वयस्क चिंपांजी हर दिन करीब एक घंटा सामाजिक गतिविधियों में बिताते हैं, जिन्हें ग्रूमिंग कहते हैं। इस दौरान दो या अधिक चिंपांजी बैठते हैं और एक-दूसरे के बालों में हाथ फेरते हैं व एक-दूसरे के धूल, कीड़े, पि□यां और बीज निकालते हैं। ग्रूमिंग की मदद से समूह के सदस्यों के बीच तनाव कम होता है। चिंपांजी ऐसे सामाजिक प्राणी होते हैं जिन्हें शारीरिक संपर्क की जरूरत होती है, और ग्रूमिंग इस जरूरत को पूरा करने में मदद करते हैं। यह समूह के सदस्यों के बीच गठजोड़ को मजबूत करता है।

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **चिंपांजी को □या खाना पसंद है?**
  - (A) फल
  - (B) मेवे
  - (C) कीट/कीड़े
  - (D) ऊपर लिखे सभी विकल्प सही हैं

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest

P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

ANIMAL PLANET

चिंपांजी और इस ग्रह पर रहने वाले दूसरे जानवरों के बारे में और जानकारी के लिए जुलाई माह के दौरान हर रात ८ बजे देखना न भूलें- वाइल्डेस्ट अफ्रीका।

पिछली बार पूछे गए सवाल, 'भारत में शेर कहां पाए जाते हैं,' का सही जवाब है- गिर नेशनल पार्क।

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी क□यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

जून प्रथम- 2014

क. अनिरुद्ध गुप्ता, सारनाथ, वाराणसी (उ.प्र.)
ख. गजल भटनागर, जयपुर (राज.)
फ. साक्षी बंसल, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
ब. कु. वनिता गुप्ता, कोटा (राज.)
भ. चैरी गुप्ता, अबोहर फाजिल्का (पंजाब)
म. सेजल बाजपेई, जोधपुर (राज.)
त्र. प्रद्यु□न जोगदंड, नई दिल्ली
त. प्रगति साहु, सआदतगंज, लखनऊ (उ.प्र.)
-. अक्षत दिनेश दीक्षित, राजकोट (गुजरात)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. आयुष्मान मिश्रा, इलाहाबाद (उ.प्र.)
ख. यशविनी कुमारी, जयपुर (राज.)
फ. तनुज शर्मा, नारायणपुर (राज.)
ब. मेधा जैन, जयपुर (राज.)
भ. मन्नु कुमारी, उदलबनी (झारखंड)
म. ओमी त्रिवेदी, लखनऊ (उ.प्र.)
त्र. दिवजोत कौर, कोटा (राज.)
त. सूरज कुमार, गोपालगंज (बिहार)
-. हार्दिक शर्मा, श्रीगंगानगर (राज.)
क. निकिता महरवाल, शिकारपुरा (राज.)
कक. नेहा मीणा, प्रतापगढ़ (राज.)
कख. उत्कर्ष श्रीवास्तव, आलनपुर (राज.)
कफ. दीपक खदा, लाखनी, सीकर (राज.)
कब. श्रवण पासवान, कतरासगढ़ (झारखंड)
कभ. खुशी मीना, जोधपुर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 351 का परिणाम

क. कु. प्राञ्जलि, टोंक (राज.)
ख. हिमानी गुप्ता, हनुमानगढ़ जं□शन, हनुमानगढ़
फ. सुहाना आरिफ, जयपुर (राज.)
ब. हर्ष कुमार, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)
भ. श्रीआ शर्मा, कानपुर नगर (उ.प्र.)
म. मोनिका शर्मा, सहारनपुर (उ.प्र.)
त्र. स्मिथ एल□जेंडर, नसीराबाद, अजमेर (राज.)
त. ऋतिका सरन, वाराणसी (उ.प्र.)
-. विजया तिवारी, सिलीगुड़ी (प.बंगाल)
क. हेमन्त शर्मा, जयपुर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 351 का सही हल

मिशेल ओबामा
क. रेडियम
ख. अफगानिस्तान
फ. दिल्ली
ब. राजस्थान
भ. मध्यप्रदेश

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

ज्ञान प्रतियोगिता

354 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

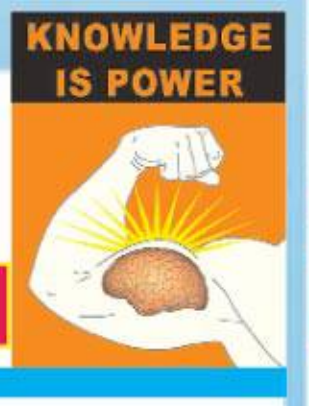

क. तेलंगाना राज्य के अस्ति□व के आने के बाद (केन्द्रशासित प्रदेशों को छोड़कर) अब हमारे देश में कितने राज्य हो गये?

(अ) ख्त्र

(ब) ख्त्र

(स) ख्-

ख. के. चन्द्रशेखर राव किस प्रदेश के मु□यमंत्री हैं?

(अ) झारखंड

(ब) छ□ीसगढ़

(स) तेलंगाना

फ. भारत के वर्तमान में गृहमंत्री कौन हैं?

(अ) सुषमा स्वराज

(ब) राजनाथ सिंह

(स) अरुण जेटली

ब इस समय तमिलनाडु की मु□यमंत्री कौन हैं ?

(अ) आनंदी बेन पटेल

(ब) वसुंधरा राजे

(स) जे. जयललिता

भ. नवीन पटनायक किस प्रदेश के मु□यमंत्री हैं?

(अ) उड़ीसा

(ब) बिहार

(स) महाराष्ट्र

हिन्दी फिल्म 'कृश' की यह सीरिज है। फिल्मों के नाम और उसके मु□य नायक का नाम लिखिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता– 354

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 25 जुलाई, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

ढूंढो तो...

नीचे दी गई आकृतियों को चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

Sidewalk Art

golf club

pennant

mug

wrench

mitten

paintbrush

bowl

heart

needle

musical note

dog's head

T-shirt

wishbone

mallet

funnel

fish

carrot

domino

rolling pin

ring

crescent moon

snake

olive

squirrel

candle

ई-मैन - 24

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

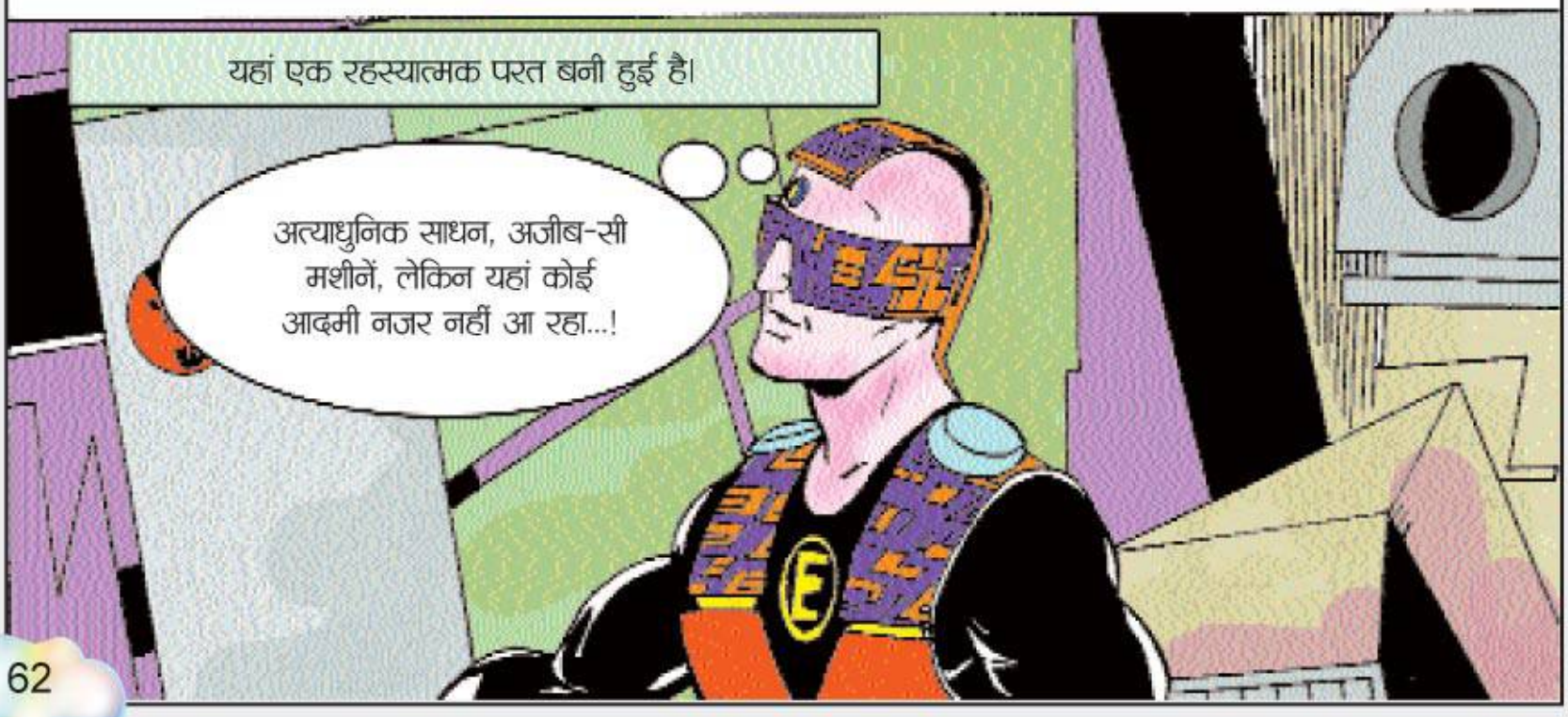

ई-मैन नहीं देख पाया कि उसको दो आंखें देख रही हैं।

वह बचना नहीं चाहिए!

ई-मैन एक फाइबर से बने गोले में कैद हो गया।

आह!?

ओह! यह तो तैर रहा है!
अगले ही क्षण वह घूमने लगा...
आह!
आह! मेरा सिर फट रहा है...
ब्रह्मा ठंडे हो गये।
हे भगवान! यदि घूमना बंद नहीं हुआ...
गोला घूमना बंद हो जाता है और वह नीचे गिरने लगता है।

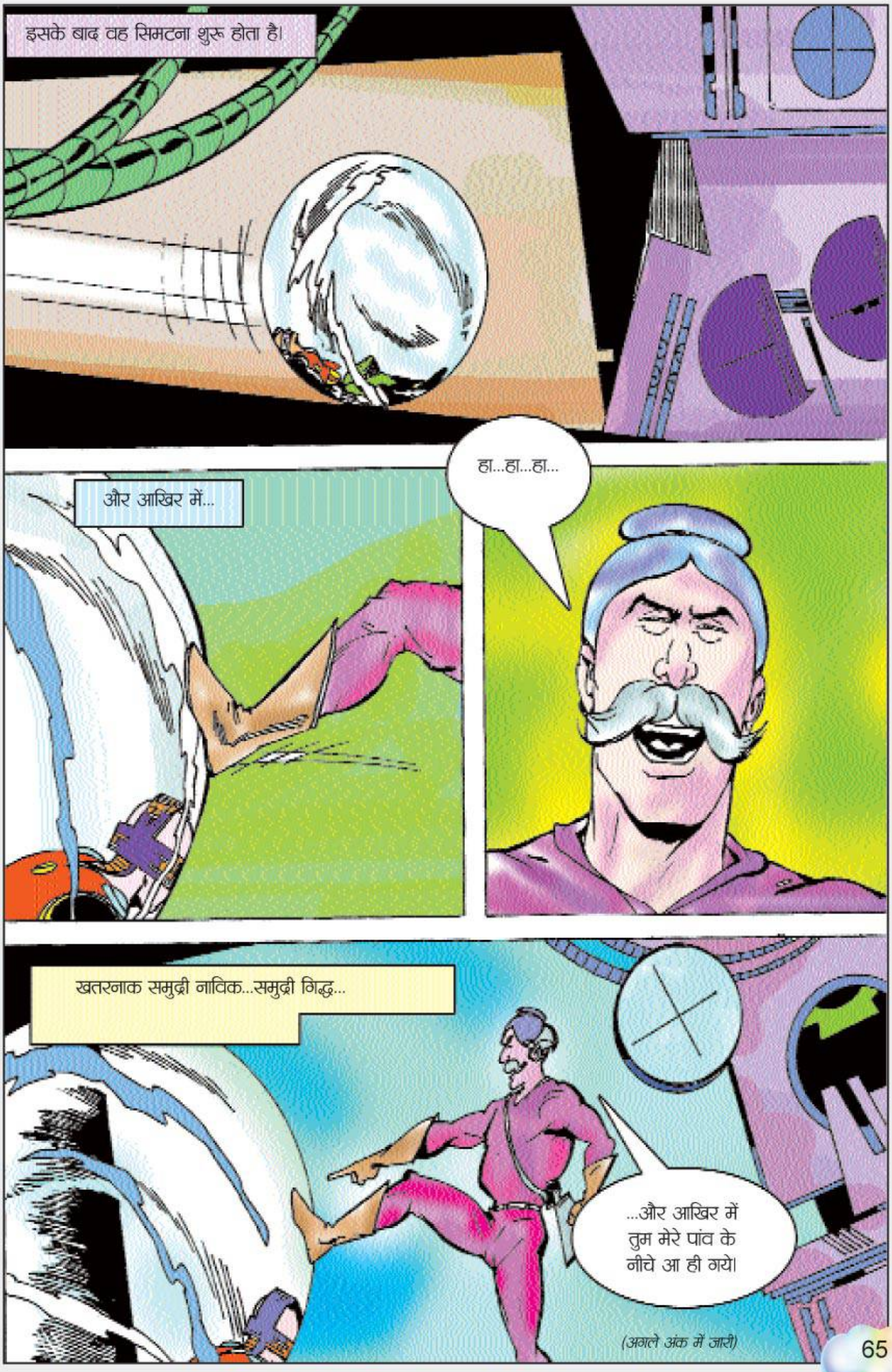
इसके बाद वह सिमटना शुरू होता है।
और आखिर में...
हा...हा...हा...
खतरनाक समुद्री नाविक...समुद्री गिद्ध...
...और आखिर में तुम मेरे पांव के नीचे आ ही गये।
(अगले अंक में जारी)

कैसा लगा

बालहंस की कहानियां नैतिक शिक्षा देने वाली होती हैं। यह हर बार नई-नई जानकारियां देती है। मु□य पृष्ठ भी खूब लुभाता है। यह अंक कमाल का लगा। इसमें दी गई विश्व की अजब-गजब जानकारियां हमें रोमांचित करने वाली थीं। इन्हें पढ़कर हमारा ज्ञान बढ़ा। बालहंस में पृष्ठों की सं□या बढ़ाएं।

- संजना निगम,
कानपुर नगर (उ.प्र.)

मैं बालहंस का नियमित पाठक हूं। यह पत्रिका मुझे बेहद प्रिय है। इस मैगजीन से हमारे ज्ञान-मनोरंजन में वृद्धि हो रही है। इसमें प्रकाशित कहानियां, चुटकुले, विभिन्न जानकारियां मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। ई-मैन चित्रकथा रोमांचित कर रही है।

- अभय प्रताप,
मोतीझील, भोजपुर (बिहार)

बालहंस बेजोड़ है
इसका कहीं न तोड़ है।
कविता कहानी चित्रकथा है
इन सबको हम पढ़ते हैं।
बालहंस है दोस्त हमारी
सबसे प्यारी सबसे न्यारी।

- कविता इनकिया,
नागौर (राज.)

I am reading BALHANS since last 5 years. It is a very wonderful magazine for all ages. It provides knowledge, fun, facts, information about new places, new words etc. Kindly also include mythological facts.

- SAKUL GARG
BAREILLY (U.P.)

इनके पत्र भी मिले

- **विजय वर्मा,** फैजाबाद
- **सुरेश बुंदेल,** टोंक (राज.)
- **बीनू आनंद,** लक्ष्मीपुर (बिहार)
- **मोइन खान,** कोटा (राज.)
- **बुरहान खान,** नयापुरा, कोटा (राज.)
- **परवेज आलम,** सिकन्दरपुर (बिहार)
- **यश गोयल,** नई दिल्ली
- **संदीप सिंह,** उदयपुर (राज.)
- **मुस्कान अंसारी,** पिपराइच, गोरखपुर
- **जितेन्द्र कुमार जांगिड़,** □ाटून्दरा (राज.)
- **शंकर लाल विश्वकर्मा,** काजीपुर
- **तानिया पठान,** फतेहपुर शेखावटी
- **विवेक कुमार,** जयपुर (राज.)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005790 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

बरसाती कार्टून

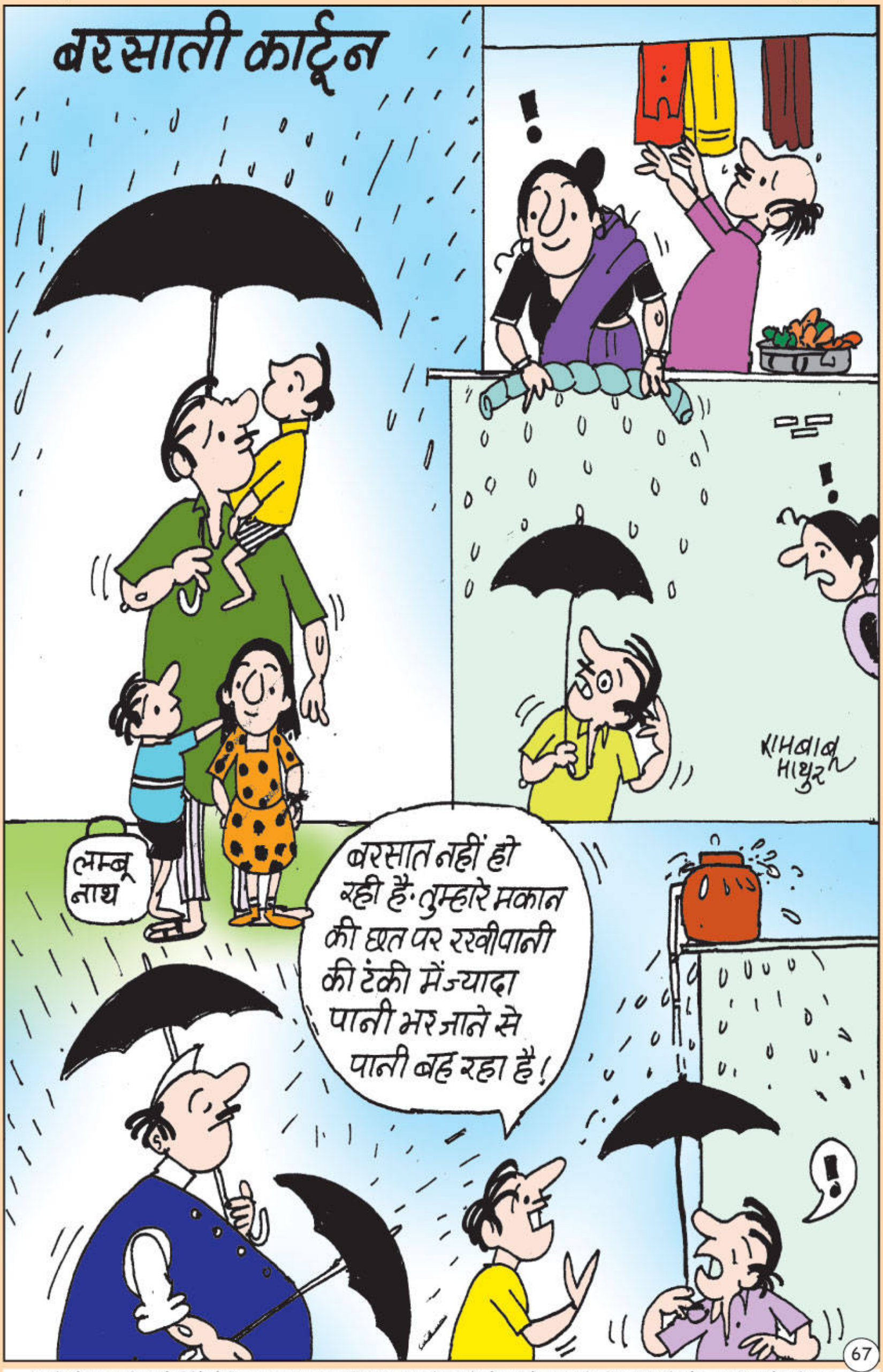

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

PARLE
PARLE
Happy Happy
Chocolatey Sandwich Biscuits
Chocolatey Sandwich Biscuits